ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 7, जनवरी 2014 (मासिक),
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

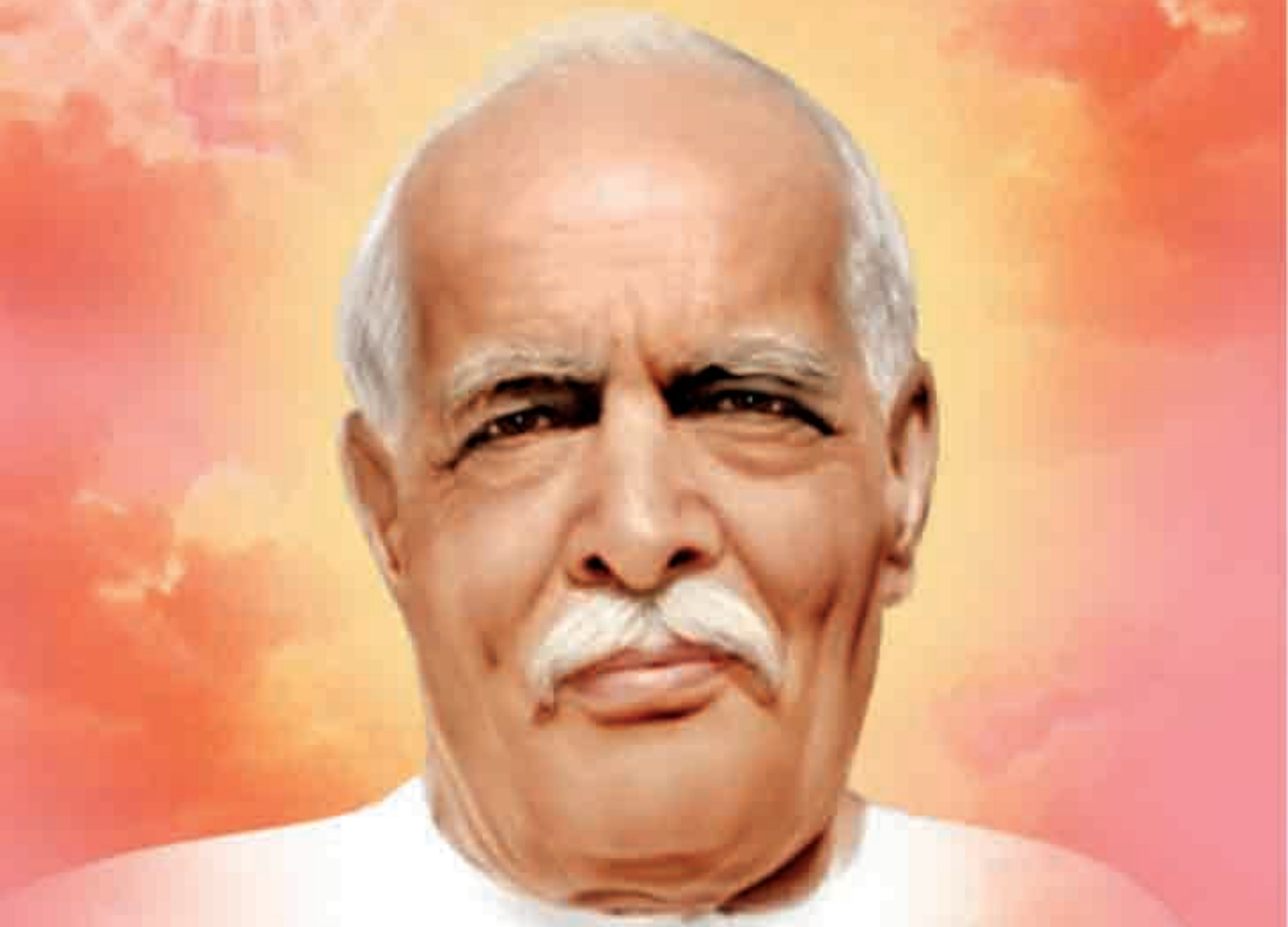

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा

स्मृति-दिवस विशेषांक

1. अहमदनगर- सिक्किम के राज्यपाल महामहिम भ्राता श्रीनिवास पाटिल को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु.सुप्रभा बहन, ब्र.कु.दीपक भाई, ब्र.कु.राजेश्वरी बहन उनके साथ। **2. कटक (कॉलेज स्क्वायर)** - नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. कुलदीप बहन एवं अन्य। **3.राजकोट-** 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बहन मॉरीन चेन, बहन नेताली मिल्लर, गुजरात विधानसभा अध्यक्ष वजुभाई वाला, ब्र.कु.भारती बहन, भ्राता निजार जुमा तथा अन्य। **4.इटानगर (अरुणाचल प्रदेश)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता एन.टुकी, जल संसाधन मन्त्री भ्राता एन.टिंगखत्रा, ब्र.कु.जुनू बहन तथा अन्य समूह चित्र में। **5.फरीदाबाद-** 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संसदीय मामलों के मन्त्रालय में सहनिदेशिका बहन एम.एन.पांडे, अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेटर भ्राता अजय रात्रा, भ्राता निजार जुमा, टैक्स गुरु भ्राता आर.एन.लखोटिया तथा अन्य। **6.रेणुका जी (नाहन)-** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह जी। साथ में ब्र.कु.रमा बहन तथा अन्य। **7.दिल्ली (लोधी रोड)-** 'निरंतर खुशी' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद समूह चित्र में दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता सुनील गौड़, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी.ईश्वरैया, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.गिरिजा बहन, ब्र.कु.पीयूष भाई तथा अन्य। **8.शाहेरा-** नवनिर्मित 'ज्ञानगंगा' भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। साथ में है ब्र.कु.रतन बहन तथा अन्य।

नव वर्ष के प्रति
दादी जानकी जी का शुभ संदेश

सुख-शान्ति-पवित्रता से सम्पन्न नवविश्व के रचयिता, सर्वरक्षक परमपिता परमात्मा शिव के अति स्नेही भाइयो और बहनो,

नववर्ष के साथ-साथ नवयुग और नए कल्प की भी हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करें।

नववर्ष के आगमन से बुद्धि रूपी नेत्र के सामने नवयुग के नज़ारे प्रत्यक्ष हो रहे हैं। सर्व आत्माओं की यह आश कि विश्व में एकता हो, सुख, शान्ति, समृद्धि हो बहुत जल्दी पूरी होने वाली है। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा.... वाली दैवी दुनिया हमारा आह्वान कर रही है।

वर्तमान समय सृष्टि-चक्र का अति महत्वपूर्ण समय है। हम जाते हुए कलियुग और आते हुए सतयुग की संधि पर अर्थात् संगमयुग पर खड़े हैं। हमें सदा ध्यान रहे कि इस हीरे तुल्य समय का एक-एक पल सफल हो। हमारा हर सेकण्ड, हर संकल्प, बोल, कर्म साधारण न हो, श्रेष्ठ हो। हम एक-दूसरे को पूरा सम्मान दें, रहमदिल बनें, सबको प्यार की पालना दें और सबके साथ सच्चे होकर चलें। एक-दूसरे के गुणों को देखें। साधनों में बुद्धि को न लगाकर ऊँचे दर्जे की साधना द्वारा आध्यात्मिक जीवन को प्रत्यक्ष करें। मन की स्थिति एकरस और 'मनमनाभव' रखें। एकाग्रता की शक्ति द्वारा शान्ति की गहन अनुभूति कर विश्व में शान्ति की लहर फैलाएँ।

वरदाता भगवान शिव से हमें अनेकानेक वरदान मिले हैं। हम अपनी वृत्ति द्वारा वृत्तियों को परिवर्तन करने की सेवा करें। शक्तिशाली मनसा सेवा द्वारा निर्विघ्न वायुमण्डल बनाएँ। अपने सर्व बोझ पिता परमात्मा को देकर सदा मुसकराते रहें।

नए वर्ष में दृढ़ता के साथ सर्व कमी-कमजोरियों को विदाई देकर 'विजयी भव' के वरदान को आत्मसात करने की कोटि-कोटि बधाइयाँ आप सब स्वीकार करें।

सर्व भाई-बहनों को नए वर्ष और नए युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ब्रह्मा बाबा की संक्षिप्त जीवनी..4
- ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान-कलश नारी के सिर पर क्यों रखा? *(सम्पादकीय)* 7
- श्रद्धांजलि.....8
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- साकार नेत्रों से निहारे गए ईश्वरीय चरित्र 10
- ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न.....14
- बाबा ने वतन में पढ़ाए ज्ञान के पाठ.....17
- मास्टर दाता बनो.....20
- नवजीवन दाता मेरा बाबा 21
- नव वर्ष इस बार *(कविता)* ...23
- घुटनों व कूल्हों की सर्जरी....23
- प्रथम मिलन में समर्पण 24
- बाबा ने कहा, बच्चा बहुत अच्छा है 27
- सत्य बाबा के सत्य बोल.....30
- बाबा ने कहा, बच्ची का चेहरा बहुत सेवा करेगा.....31
- अन्तिम जन्म में बिना भक्ति किए मिल गए भगवान 33

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

ब्रह्मा बाबा की संक्षिप्त जीवनी

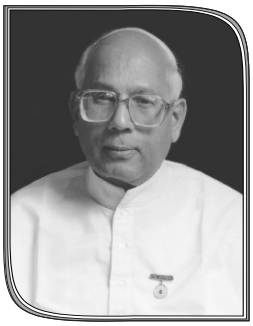

यहाँ संक्षिप्त में दादा लेखराज का जीवन वृतांत दिया गया है, जिन्हें ईश्वर ने अपने माध्यम के रूप में अपनाया। उन कुछ घटनाओं का भी वर्णन किया गया है जिन्होंने उन्हें ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के लिए प्रेरित किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्माकुमारी संस्था ब्रह्मा बाबा को गुरु या ईश्वर नहीं मानती बल्कि ईश्वर का माध्यम मात्र मानती है।

दादा लेखराज के आंतरिक रूपांतरण की कहानी वर्ष 1936-37 से जुड़ी हुई है। यह वह समय था जब भारत के लोग राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए भीषण संघर्ष कर रहे थे। लोग अपने राजनैतिक शत्रुओं से तो लड़ रहे थे किन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि हर किसी ने काम-वासना, आसक्ति, लोभ, क्रोध, अभिमान जैसी बुराइयों से या तो समझौता कर लिया था या उनके आगे समर्पण कर दिया था। धर्म के नाम पर फूहड़ रिवाजों और अंधविश्वासों का बोलबाला था। अधिकाधिक शक्तिशाली हथियारों के रूप में घृणा और हिंसा को अभिव्यक्ति मिल रही थी और भीतर ही भीतर एक विश्वयुद्ध की तैयारी हो रही थी। कार्ल मार्क्स तथा सिग्मंड फ्रायड के विचारों के कारण आध्यात्मिक विचारों की अपरिमित हानि हो रही थी। विश्व को इस गंभीर संकट से उबारने के लिए मनुष्य के दृष्टिकोण में परिवर्तन अत्यावश्यक था।

इसे कौन कर सकता था?

बिल ड्यूरैण्ड ने कहा है कि मनुष्य का मन एक कलन (कैलकुलस) से दुखी हो जाता है तो वह सृष्टि के रहस्यों को कैसे समझ सकेगा? इसलिए ईश्वर, स्वयं सृष्टिकर्त्ता के लिए जरूरी था कि वे रहस्यों की व्याख्या करते और उसके लिए ब्रह्मा बाबा जैसे श्रेष्ठजन की आवश्यकता थी। दादा लेखराज हैदराबाद-सिंध (जो कि अब पाकिस्तान में है) के एक उपनगर में एक प्रधानाध्यापक के घर पैदा हुए थे। अपनी व्यवसायिक क्षमता, मिलनसार स्वभाव तथा उद्यमशीलता के कारण वे बड़े सफल जौहरी बने और कोलकाता तथा मुम्बई में उनकी मुख्य व्यवसायिक शाखायें थीं। वे स्नेहमय स्वभाव के थे और उन्हें 'दादा' कहा जाता था।

यद्यपि वे धनी थे तथापि वे अत्यंत धार्मिक व्यक्ति थे। वे देवता श्री नारायण के परम भक्त थे और प्रतिदिन यहाँ तक कि जब रेल-यात्रा कर रहे होते थे तब भी नियमित रूप से श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ किया करते थे। उन्होंने वाराणसी, अमरनाथ तथा ऐसे ही अन्य स्थानों का भ्रमण इसलिए किया क्योंकि उनके अंतर्मन में अनुभवातीत सत्य को जानने की ललक थी। अमरनाथ की एक तीर्थ यात्रा में उन्होंने एक पुजारी से पूछा था कि क्या अमरनाथ में शिव का 'शिवलिंग' अपने आप बन जाता है या उसे मनुष्य के हाथों द्वारा आकार प्राप्त होता है? इस प्रकार वे जिज्ञासु थे और अंधविश्वासी नहीं थे।

जब भी राजा और राजकुमार उनके राज-अतिथि हुआ करते थे, वे केवल शाकाहारी भोजन से ही उनका आतिथ्य करते थे और मदिरा से सर्वथा परहेज करते थे। जब एक भोज में मांस और मदिरा के अभाव में एक अतिथि ने यह कहा कि भोज बेमज़ा और बेस्वाद है तो दादा ने मज़ाक में कहा कि चूँकि वे उन्हें कागज के नोटों के बदले में चमकीले रत्न और हीरे देते हैं, इसलिए वे उनके लिए अपने सिद्धांतों को त्यागने के लिए बाध्य नहीं हैं। उनकी एक प्रिय कहावत थी, ''धरत परिये पर धर्म न छोड़िए'' अर्थात् यदि हमें मृत्यु का भय हो तो भी हम अपनी धार्मिक

चेतना का हनन नहीं करेंगे और अपने नैतिक सिद्धांतों को नहीं त्यागेंगे।

दादा के हृदय में महिलाओं के प्रति अपार सम्मान था। वे अपनी पत्नी जसोदा जी के प्रति स्नेह और आदर प्रकट किया करते थे। वे महिलाओं का इतना सम्मान करते थे कि वे श्रीलक्ष्मी द्वारा श्रीनारायण की चरण-सेवा के दृश्य को पसंद नहीं करते थे यद्यपि नारायण उनके प्रिय तथा सम्मानित देवता थे। दादा की दृष्टि में यह दृश्य नारियों की दासता का प्रतीक था। एक बार उन्होंने एक चित्रकार को बुलाया और उनसे कहा कि चित्र से श्रीलक्ष्मी के इस दृश्य को मिटा दें और उन्हें मुक्त कर दें।

एक दिन जब दादा आत्मा के गहन मनन-चिंतन में बैठे हुए थे तो उन्होंने स्वयं को अपने संपूर्ण भौतिक परिवेश से विमुक्त पाया। उन्हें विनाश के अनेक भयंकर दृश्य दिखाई दिए। उन्होंने देखा कि प्रलय और भूकंपों में अपार नर-नारियों और शिशुओं की प्राणहानि हो रही है। उन्होंने भीषण परिणामों वाले रक्त रंजित गृह-युद्ध भी देखे। उन्होंने यह भी देखा कि एक परमाणविक महाज्वाला विश्व के एक बड़े भाग को पल भर में नष्ट कर रही है। दादा भयभीत हो उठे और चीख पड़े – ''हे प्रभु! यह इतना भयंकर है कि मैं सहन नहीं कर सकता। निश्चय ही यह विश्व-विनाश है। हे प्रभु, हे स्वामी, मुझे अपने सुखप्रद एवं आनंदप्रद रूप के दर्शन कराइए क्योंकि मैं यह सब और अधिक नहीं देख सकता।''

पल भर में दृश्य बदल गया और उनके समक्ष एक नया दृश्य आया। अब उन्हें 'चतुर्भुज विष्णु' दिखाई दिये। एक आवाज आई ''मैं चतुर्भुज विष्णु हूँ और तुम भी वैसे ही हो'' (अहं चतुर्भुज विष्णु तत्त्वम)। इसका अर्थ है, ''तुम्हारे मूल रूप में तुम जो कि आत्मा हो, स्वर्ग के राज्य के एक देवता – श्री नारायण थे।'' यह इनके लिए एक आह्वान था कि जागो और अपने आध्यात्मिक स्वरूप के उच्चतम कुल को प्राप्त करो।

एक दिन जब वे एक विद्वान संत का प्रवचन सुन रहे थे, जिसका आयोजन उन्हीं के घर पर हुआ था, तो उनके अंतर्मन में यह इच्छा जागी कि वहाँ से उठकर एकांत में चले जायें, मानो कि ईश्वरीय पुकार आ रही हो। दादा प्रवचन के बीच से ही, अपने स्थान पर से उठ खड़े हुए और अपने प्रार्थना-कक्ष में चले गये। भले ही वह उनके सामान्य नियम के विरुद्ध था। इस असामान्य घटना को देखकर उनकी पत्नी जशोदा जी और उनकी पुत्रवधू बृजइंद्रा (जो कि उस समय राधा कहलाती थी) भी उनके पीछे हो ली। उन्हें बाबा के नेत्रों में उज्ज्वल आभा देखकर आश्चर्य हुआ। बाबा के मुखमण्डल से अकस्मात् दिव्य प्रकाश बिखरने लगा और पूरे कक्ष में फैल गया। उन्हें यह विचित्र अनुभूति हुई कि वे अपने शरीर-भान से विमुक्त हो गये हैं और उन पर दिव्य शांति का अवतरण हुआ है। परम शांति के वातावरण में बाबा के मुख से ईश्वर के ये शब्द निकले –

''निज आनंद स्वरूपम्
शिवोऽहम् शिवोऽहम्।
ज्ञान स्वरूपम्
शिवोऽहम् शिवोऽहम्।
प्रकाश स्वरूपम्
शिवोऽहम् शिवोऽहम्।''

जिनका अर्थ है :-

''मैं आनंदमय स्वरूप हूँ,
मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।
मैं ज्ञानमय स्वरूप हूँ,
मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।
मैं प्रकाशमय स्वरूप हूँ,
मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।''

निराकार शिव का उनके शरीर पर अवतरण हुआ था और दादा लेखराज के माध्यम से शिव ने अपना अनुभवातीत परिचय दिया था। अब दादा लेखराज, शिव के माध्यम और साधन बन गये थे और अब उनके माध्यम से शिव अपना ईश्वरीय ज्ञान देने लगे, जो कि दादा के लिए और अन्य सुनने वाले लोगों के लिए नया ज्ञान था।

अब दादा ने हैदराबाद-सिंध में जशोदा निवास नामक अपने घर में वर्ष 1936 में नियमित रूप से सत्संग या धार्मिक सभा का आरंभ किया।

उसका स्वरूप एक पारिवारिक सत्संग का था किन्तु बहुत से लोग उसमें आने लगे क्योंकि वे ऐसा करने के लिए प्रेरित हो रहे थे। बाबा ने उनसे कहा कि वे पूर्ण शुद्धता का जीवन बितायें, कामवासना भीषणतम बुराई है और देह-अभिमान सभी बुराइयों की जड़ है।

इन सभाओं में लोग आकर पवित्र ॐ का जप किया करते थे इसलिए यह सत्संग 'ओम मण्डली' कहलाने लगा। पुरुष, महिलायें तथा बच्चे भी इस सत्संग में आते थे। इन लोगों में एक थी किशोरी कन्या 'ओम राधे' जो कि सर्वाधिक होनहार थी। कालांतर में उसे आध्यात्मिक माता की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और वह ईश्वरीय ज्ञान में उत्कृष्टता, योग और शुद्धता की उच्चता तथा अन्य लोगों की आध्यात्मिक पालना करने के कार्य के कारण 'जगदम्बा सरस्वती' कहलाई।

बाबा ने अक्तूबर 1937 में एक प्रबंध समिति गठित की जिसमें महिलायें थीं और 17 फरवरी, 1938 को उन्होंने अपना वसीयतनामा लिखा जिसमें उन्होंने अपनी संपत्ति इस न्यास को दे दी। इस बीच देश का विभाजन हो गया और कराची पाकिस्तान में गया। इस संस्था को सन् 1951 में भारत के लोगों से निमंत्रण मिला कि वे भारत आकर ईश्वरीय सेवा का कार्य करें इसलिए यह संस्था भारत चली

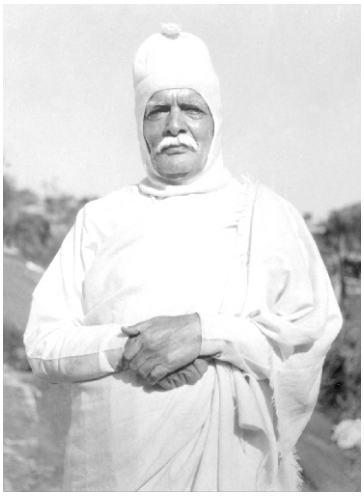

आई और तब से उसका मुख्यालय राजस्थान में माउण्ट आबू में स्थित है और उसका सेवा-कार्य बढ़ता जा रहा है। सन् 1965 में मातेश्वरी सरस्वती ने अपने पार्थिव शरीर को छोड़ दिया।

अब तक ईश्वरीय सेवा गतिशील हो गई थी। ईश्वरीय संदेश का दूर-दूर तक प्रसार करने के लिए समर्पित, आत्म बलिदानी योगियों के एक संवर्ग का निर्माण किया गया था। ये अधिकांशत: बहनें थीं जिनके व्यवहारिक आचरण में वह शुद्धता प्रतिबिंबित होती थी, जो कि सतयुग में होगी। अब वे कार्यक्रमों का आयोजन करने लगी थीं, केन्द्रों का संचालन करने लगी थीं, उन्नयनकारी प्रवचन देने लगी थीं, श्रद्धालुओं की आध्यात्मिक समस्यायें हल करने लगी थीं, अपने आध्यात्मिक अन्वेषण में स्थिर हो गई थीं तथा अब वे अति गुणी योगिनियाँ थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि बाबा ने अपना कार्य पूरा कर लिया था और वे कार्यभार दूसरों को सौंपना चाहते थे ताकि उन लोगों को सेवा के व्यापक क्षेत्र में अधिक अनुभव प्राप्त हो, इसलिए उन्होंने 18 जनवरी, 1969 को रात्रिकालीन प्रवचन देने के कुछ ही मिनटों पश्चात् अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया। जो लोग उनके संपर्क में थे उन्हें पिछले कुछ समय से परिपूर्णता की भासना मिली थी और अनासक्ति का अनुभव किया था। वे बाबा के मुखमण्डल से प्रगाढ़ आभा को बिखरता हुआ देखते थे और उनके सिर के चतुर्दिक् एक देदीप्यमान प्रभामण्डल देखा करते थे। बाबा ने अब वह कार्य पूरा कर लिया था जो कि उन्हें अपने भौतिक रूप में करना था और अब वे अस्तित्व के एक उच्चतर लोक में पहुँच चुके थे। अब वे एक देवदूत बन गये थे और मुक्त संचरण की तथा स्थूल और भौतिक रूप से स्वतंत्रता की इस अवस्था में अब उनकी सेवा-शक्ति लाखों गुणा बढ़ गई थी।

अपने देवदूत लोक से बाबा, जो कि देवदूत हैं, अब शिव बाबा के साथ स्वरैक्य साधकर विश्व में हर कहीं जाते हैं और अनेक मानव-आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान, शुद्धता तथा शांति प्रदान करते हैं। इस प्रकार शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा, जिन्हें कि हम 'बाप-दादा' के नाम से जानते हैं, स्वर्ण युग की पुन: स्थापना का कार्य मिलजुल कर कर रहे हैं। ❖

ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान-कलश नारी के सिर पर क्यों रखा ?

कई लोग अक्सर यह प्रश्न पूछते हैं कि ब्रह्माबाबा ने नारी में ऐसे कौन-से गुण देखे जो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रशासनिक बागडोर उसके हाथों में सौंप दी। वे यह भी कहते हैं कि जब वे स्वयं पुरुष थे और ऊँचे गुणों से विभूषित थे तो क्या वे अपने जैसे अन्य पुरुषों को तैयार नहीं कर सकते थे?

धर्मपिताओं के बीच कहीं धर्ममाता को स्थान नहीं मिला

इस प्रश्न का सही-सही उत्तर एक काल की दृष्टि रखने से नहीं बल्कि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान पर पूरी नज़र दौड़ाने पर ही मिल सकता है। सतयुग-त्रेतायुग में समाज नारी प्रधान था इसलिए पहले श्री लक्ष्मी फिर श्री नारायण का नाम लिया जाता है अर्थात् देवताओं से पहले देवियों का नाम लिए जाने की प्रथा वहाँ थी। परन्तु द्वापरयुग में समाज की हर सत्ता में पुरुष की प्रधानता हो गई। द्वापरयुग से कलियुग तक सभी बड़े धर्मों की स्थापना भी धर्मपिताओं द्वारा हुई, कहीं भी धर्ममाता को स्थान नहीं मिला। द्वापरयुग से कलियुग तक हर क्षेत्र में धर्मग्लानि भी द्रुत गति से हुई परन्तु अति भी चरमसीमा तक पहुँचकर इति में बदल जाती है। अब इति अर्थात् युग परिवर्तन की वेला है। कलियुग के बाद फिर सतयुग का आगमन होने वाला है। नए युग के लिए नए मूल्यों, नए ज्ञान और नए नेतृत्व की आवश्यकता होती है। धर्मग्लानि के समय अपनाए गए फार्मूले को, धर्म के उत्थान के लिए बदलना अनिवार्य हो जाता है। इसलिए स्वयं निराकार परमात्मा शिव ने धर्म की 16 कलाओं से सम्पन्न युग की स्थापना के लिए, प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से धर्ममाता के हाथ में धर्म की बागडोर देकर नए फार्मूले का सूत्रपात किया है।

घिसे-पिटे मार्ग पर चलकर नया नहीं किया जा सकता

वर्तमान समय अनेक क्षेत्रों में छोटी-बड़ी क्रान्तियाँ होती रही हैं परन्तु ऐसी क्रान्ति जो समस्त क्षेत्रों पर प्रभाव डाले, सब क्षेत्रों में आमूल-चूल परिवर्तन ला दे आध्यात्मिक क्रान्ति ही हो सकती है। क्रान्ति का अर्थ है कुछ नया करना। घिसे-पिटे मार्ग पर चलकर न तो कुछ नया किया जा सकता है और न ही उसे क्रान्ति का नाम दिया जा सकता है। परमात्मा पिता ने इस आध्यात्मिक क्रान्ति में माताओं के हाथ में मूल्यों की स्थापना की डोर थमाकर, तथाकथित अबला

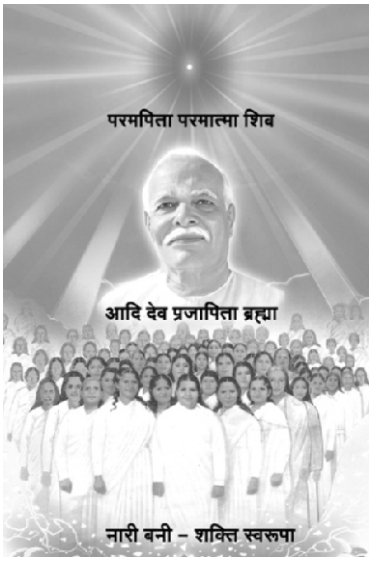

को घोर पतन की बीहड़ में से सदाचरण की राह बनाने की जिम्मेवारी सम्भालने का आश्चर्यकारी कार्य दे दिया है। समाज में ऊँचे दर्जे पर विराजमान व्यक्ति के द्वारा ऊँचा काम करवा लेना कोई बड़ी बात नहीं परन्तु जिसे समाज ने दूसरा दर्जा दिया, भगवान उसी द्वारा प्रथम और ऊँचे दर्जे का कार्य करवा लें, यही तो ईश्वरीय कार्य की सिद्धि है। भगवान असम्भव को सम्भव करने वाले और बिगड़ी को बनाने वाले हैं, इसी बात से सिद्ध होता है। प्रजापिता ब्रह्मा तो निमित्त हैं परन्तु उनके माध्यम से इस वैचारिक क्रान्ति के सूत्रधार तो स्वयं परमात्मा शिव ही हैं।

नारी है 'पूज्या' न कि 'भोग्या'

समाज में दो ही वर्ग हैं, एक नारी और दूसरा नर। जब इन दोनों के सम्बन्ध आत्मिक होते हैं तो धर्म का उत्कर्ष होता है और जब इन दोनों के सम्बन्धों में देह अभिमान प्रवेश कर लेता है तो धर्म की ग्लानि हो जाती है। धर्म की ग्लानि के इस मूल कारण का निवारण तभी हो सकता है जब नारी अपने को 'भोग्या' समझने की मानसिकता से ऊपर उठकर अपने को 'पूज्या' बना ले। 'पूज्या' बनने के लिए उसमें आध्यात्मिक बल होना अनिवार्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही उसे आध्यात्मिक शक्तियों से सुसज्जित करने का युगान्तरकारी कार्य परमात्मा पिता ने किया है।

शिक्षा, नौकरी के अधिकार के साथ-साथ काम-विकार की परतन्त्रता से भी मुक्ति

वर्तमान समाज की अधिकांश नारियाँ नारकीय जीवन भोग रही हैं, हमें यह समझना होगा कि 'काम विकार' की खूली छूट, उसके सरेआम प्रचार-प्रसार के कारण ही नारी की दुर्दशा और समाज का नैतिक पतन है। कारण और भी हैं परन्तु सर्वप्रधान कारण यही है, इसको गहराई से समझना अनिवार्य है। पुरुष के समान सम्मान और अधिकार पाने को लालायित नारी को शिक्षा, नौकरी आदि के अधिकारों के साथ-साथ यह अधिकार भी मिलना चाहिए कि वह शारीरिक रूप से पुरुष की काम विकार की पाशविक परतन्त्रता में ना रहे। तभी वह सच्चे अर्थों में आत्मिक स्तर तक स्वतन्त्र हो सकेगी। इसलिए भगवान ने नारी को यह लक्ष्य दिया कि वह काम विकार तथा अन्य विकारों के फैलते ज़हर से समाज को बचाने में स्वयं एक आध्यात्मिक क्रान्ति का नेतृत्व करे जिसके द्वारा समाज में आत्मचेतना जागृत हो। इससे नारी में भी विश्व बंधुत्व की भावना जाग सकेगी और वह यह दृढ़ धारणा भी कर सकेगी कि चिकने चमड़े के नीचे ढका हुआ मात्र मांस का पुतला न होकर, वह मूल्यों और सद्गुणों से ओत-प्रोत शक्ति है जो कि बौद्धिक और नैतिक बल द्वारा समाज को स्वास्थ्यकारी दिशा देकर शाश्वत सुख-शान्ति की स्थापना कर सकती है। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर भगवान ने आध्यात्मिक क्रान्ति का ध्वज नारी को थमाया है जिसमें भ्रातागण को भी सहयोगी होकर आगे बढ़ने के पूर्ण अवसर उपलब्ध हैं।

– ब्र.कु आत्म प्रकाश

श्रद्धांजलि

साकार मात-पिता के हस्तों से पली, बापदादा की अति लाडली, सबकी स्नेही मीठी पुष्पाल बहन (मुजफ्फरपुर की रानी बहन की लौकिक माता जी) ने 50 वर्षों से भी अधिक समय से समर्पित रूप में अथक ईश्वरीय सेवायें दी। आपने शुरू से हाँ जी का पाठ पढ़ा। आपको दीदी मनमोहिनी जी ने विदेश भेजा जहाँ आपने जर्मनी, हॉलैण्ड में रहकर बहुत प्यार से विदेशी भाई-बहनों की पालना की। आप बाबा की बहुत नम्रचित्त, सच्चे दिल वाली, आज्ञाकारी होली मदर थी। सबकी बहुत प्यार से पालना करती थी। पिछले कुछ समय से आप जमशेदपुर (झारखण्ड) में रहकर अपनी सेवायें दे रही थीं। अभी शरीर साथ नहीं देता था इसलिए ग्लोबल हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था। तीन दिसंबर, 2013 सवेरे 6.30 बजे आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोदी में चली गईं। ऐसी स्नेही आत्मा को पूरा दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

नाम के अनुरूप अमृत बरसाने वाली पत्रिका ज्ञानामृत का सितम्बर महीने का अंक मिला। सभी लेख व कविताएँ दिल को छू देने वाले लगे। लेख ' फिर वैसा होगा जैसा यह था' में बाबा किस तरह संकट में रक्षा करते हैं, इसे दर्शाया गया है। शिव बाबा जगतगुरु हैं, हम सभी उनके शिष्य हैं। अगर हम शिव बाबा की श्रीमत का पालन करेंगे तो सुधर जायेंगे।

– ब्रह्माकुमारी सरोज,
बैरिया (बलिया), उ.प्र.

जुलाई, 2013 में सम्पादकीय 'गुप्त दान महाकल्याण' में कौन-से दान का कितना पुण्य मिलता है, बहुत अच्छी तरह से समझाया गया है। इसी अंक में दादी जी के दिए उत्तरों से पुरुषार्थ में हिम्मत और उत्साह बढ़ता है। 'पीछा करता है कर्म फल' लेख में लिखा है, 'जैसे बछड़ा अपनी माता को ढूंढ़कर उसी के पास जाता है, उसी तरह पूर्व जन्मों में किया हुआ पाप अथवा पुण्य, कर्त्ता को ढूंढ़ लेता है', यह बात समाज को जगाने के लिए काफी है।

– ब्रह्माकुमार ज्ञानेश्वर,
बुरहानपुर (म.प्र)

अक्तूबर, 2013 अंक में 'कर्मगति के ज्ञान द्वारा व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति' लेख पढ़कर बहुत शान्ति मिली है क्योंकि इसमें कई प्वाइन्ट शान्तिदायी हैं जैसे कि कोई देने, कोई लेने आता है। इस बात पर बहुत विचार करने के उपरान्त यह पाया कि नहीं भाग सकता कोई कर्मों से। कर्म के ज्ञान से आती है सहनशीलता। कर्म का ज्ञान होने से मानव का जीवन बहुत सरल हो जाता है। मैंने जब से इस लेख को पढ़ा है तब से मुझे बहुत सन्तोष मिला है और बहुत अच्छा लगा है।

– उमा बहन, कानपुर

अक्तूबर, 2013 अंक में सम्पादकीय 'वृद्धावस्था की तैयारी' मन को छूने वाला था। इसमें बहुत अच्छे और सरल ढंग से समझाया गया है कि जैसे वृद्धावस्था के लिये हम बैंक में धन जमा करते हैं, उसी प्रकार, वृद्धावस्था की तैयारी जवानी से ही शुरू कर देनी चाहिए। उजाला रहते अर्थात् शरीर में बल रहते ईश्वरीय ज्ञान धारण कर लेना चाहिए।

– लालजीभाई गोवेकर,
मेहकर, बुलडाणा (महाराष्ट्र)

सितम्बर, 2013 अंक में प्रकाशित 'राजनीतिज्ञों का सम्मान क्यों?' में लिखा है, निचला वर्ग उच्च वर्ग का अनुसरण करता है। ज्ञान तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिये ईश्वरीय वरदान है बिना भेदभाव के। राजनीति और अध्यात्म का मेल सोने में सुहागे जैसा है। सूर्य की धूप और हवा की तरह ज्ञान सब के लिए उपलब्ध है। इन सब महान शब्दों से भरा लेख बहुत प्रभावशाली है। कई लोगों ने हमसे ऐसे प्रश्न पूछे हैं कि राजनीतिज्ञों का सम्मान क्यों? लेख की जेरोक्स कापी निकाल बांटने जैसी हैं।

– ब्रह्माकुमार सी.एन.मोहिते,
हुबली (कर्नाटक)

ज्ञान का अमृत मिलता नित ही,
'ज्ञानामृत' ले आता,
परम सत्य की, परम तत्व की,
महिमा जो बतलाता।
परमपिता, परमेश्वर की जो,
यश-गाथा को गाता,
सचमुच में 'ज्ञानामृत' प्रियवर,
मुझको बहुत ही भाता।
पुत्र बनें हम पिता के सच्चे,
'ज्ञानामृत' सिखलाता,
सच्चाई और अच्छाई के
नव गीतों को गाता।

– प्रो.शरद नारायण खरे,
मंडला (म.प्र)

ज्ञानामृत के सर्व पाठको को नव वर्ष की कोटि कोटि शुभ बधाइयाँ

साकार नेत्रों से निहारे गए ईश्वरीय चरित्र

● ब्रह्माकुमार बृजमोहन, दिल्ली

सन् 1955 में हम परिवार सहित पहली बार बाबा से मिले। हम दिल्ली में रहते थे। सबसे पहले हमारे पिता जी (जगदीश आनन्द जी) ईश्वरीय ज्ञान में आए। जब उन्हें ईश्वरीय ज्ञान की धारणाओं पर चलते 6 मास हो गए, तो उन्हें मधुबन (आबू पर्वत स्थित मुख्यालय) जाने और बाबा से मिलने की अनुमति मिली। मुझे और मेरे छोटे भाई को यह अनुमति नहीं मिली क्योंकि हम दोनों के 6 मास अभी पूरे नहीं हुए थे। हमने बाबा को टेलीग्राम भेजा कि हम बच्चे तो इसी परिवार के सदस्य हैं इसलिए हमें भी साथ आने की अनुमति दी जाए। फिर हमें भी 'विशेष केस' में अनुमति मिली। इस प्रकार, हम चार सदस्यों का परिवार सन् 1955 में बाबा-मम्मा से मिलने मधुबन पहुँचा। उस समय यज्ञ कोटा हाउस में चलता था। आजकल वह राजस्थान सरकार का सर्किट हाउस बना हुआ है। हम बाबा से मिलने के लिए बड़ी उत्सुकता के साथ हिस्ट्री हॉल से भी छोटे हॉल में बैठे थे। मन में जिज्ञासा की लहरें उठ रही थीं कि वह तन कैसा होगा जिसमें भगवान आते हैं।

शरीर का अहसास समाप्त हो गया

थोड़ी देर बाद सामने रखी दो संदलियों पर एक तरफ बाबा और दूसरी तरफ मम्मा आकर बैठे। दोनों में बहुत ही आकर्षण था। मैं एक बार बाबा को और दूसरी बार मम्मा को देखता था। दोनों ही मेरे मन और निगाहों को समान रूप से आकर्षित कर रहे थे। मिलने वाले सभी बच्चों को बारी-बारी मम्मा और बाबा की गोद में जाने का सौभाग्य मिलता था। पहले मेरे माता-पिता ने मम्मा-बाबा की गोद ली। फिर मेरी बारी आई, उस समय ऐसा महसूस हुआ जैसे शरीर है ही नहीं, थोड़ी चेतनता है पर अहसास नहीं है कि शरीर कहाँ है, इतना हल्कापन महसूस हुआ। फिर मम्मा की गोद में गया। वह तो और भी प्यार भरी थी। उसमें बहुत शक्ति थी। गोद में थोड़ा समय रहते थे, समय पूरा होने पर बाबा या मम्मा पीठ पर थपकी देते थे कि तुम्हारा समय पूरा हो गया। मुझे भी मम्मा ने थपकी दी, मैं थोड़ा उठा और फिर दूसरी बार गोद में चला गया। मुझे इतना अच्छा लग रहा था कि अब उठना नहीं है। बहुत ही प्यारा अनुभव था। जीवन में पहली बार ऐसा प्यारा अनुभव हुआ।

लौकिक, अलौकिक दोनों सेवा करो

इसके बाद दूसरे कमरे में जाकर हमारे परिवार को बाबा से मिलना था। मिलते समय मेरे लौकिक पिता जी ने,

जिन्हें ईश्वरीय पढ़ाई और ईश्वरीय सेवा में आगे बढ़ते जाने का बहुत उमंग था, बाबा को कहा, बाबा मैं लौकिक कार्य छोड़कर ईश्वरीय सेवा में लगना चाहता हूँ। बाबा के तन में तो शिवबाबा थे। बापदादा दोनों एक ही तन में थे। बापदादा ने बहुत मुसकराते हुए कहा, तुम्हारा तो परिवार है, तुम्हें निमित्त बनकर परिवार को भी सम्भालना है। लौकिक, अलौकिक दोनों सेवा करो। इसके बाद लौकिक माता जी की बारी आई, बाबा ने कहा, वैसे तो तुम नष्टोमोहा हो लेकिन मैं जगदीश आनन्द बच्चे को (मेरे पिता जी को) कहूँगा कि किसी तीर्थस्थान पर आपको सेवाकेन्द्र खोलकर दे, वहाँ आप रहो। इससे आप और अधिक नष्टोमोहा हो जाएंगी और तीर्थ पर बाबा की सेवा भी हो जाएगी। मथुरा दिल्ली के पास है, पिता जी ने वहाँ सेवाकेन्द्र खोल दिया। माताजी वहाँ अन्तिम घड़ी तक रहीं। हम

उनको कहते थे, अब उम्र बड़ी हो गई है, हमारे पास आ जाओ। कहती थी, बाबा ने मुझे यहीं बिठाया है, यहीं बैठूँगी। किसी भी जिज्ञासु को वे ईश्वरीय ज्ञान इतनी तल्लीनता से सुनाती थी कि शरीर के दुख-दर्द का अहसास ही नहीं होता था। ईश्वरीय शक्ति उनको चलाती रही।

जन्मपत्री जानकर दी राय

मैं उस समय लॉ कालेज में पढ़ता था और चार्टर्ड अकाउंटेंसी की ट्रेनिंग ले रहा था। बाबा ने मुझे कहा, तुम अपनी पढ़ाई पूरी कर लो। मेरे से दो साल छोटा मेरा भाई भी कालेज में पढ़ता था, उसको बाबा ने पढ़ाई छोड़ने के लिए कहा। भले ही बाबा ने सबको अलग-अलग श्रीमत दी पर इसी में कल्याण था। छोटे भाई ने तीन साल बाद शरीर छोड़ दिया। पढ़ाई छोड़कर उसने इन तीन वर्षों में बहुत ईश्वरीय सेवा की। बाबा ने मुझको पढ़ने के लिए कहा, उनको मालूम था कि इसको अभी इस शरीर में रहना है। इस प्रकार बाबा ने हरेक को उसकी जन्मपत्री जानकर राय दी।

घर में खुल गया सेन्टर

बाबा से मिलकर हम अपने लौकिक घर आ गए और हमें समयानुसार बाबा से मार्गदर्शन मिलता रहा। दिल्ली में पहले, हमारे संयुक्त परिवार में सेन्टर खुला। फिर पिताजी ने सेवाकेन्द्र को संयुक्त परिवार से थोड़े अलग स्थान पर कर दिया। यह दिल्ली का दूसरे नम्बर का सेन्टर था। पहले सेन्टर (कमला नगर) पर हमने ज्ञान लिया था, दूसरा सेन्टर हमारे घर में चलने लगा, उसमें दादी प्रकाशमणि एक शिक्षिका के रूप में नियुक्त हुईं, हम साथ ही खाते, रहते थे, जैसे सेन्टर और घर आपस में मिल गए थे। जिन दिनों चार्टर्ड अकाउंटेंट की परीक्षा थी, मैं प्रतिदिन दादी प्रकाशमणि जी से दृष्टि लेकर ही जाता था। उन दिनों यह पढ़ाई काफी मुश्किल होती थी, पहले प्रयास में कोई मुश्किल ही पास होता था पर मेरे परीक्षा परिणाम में मैं सफल हो गया। मैं बहुत खुश हो गया कि बाबा ने ज्ञान, योग की शक्ति से आसानी से पास करा दिया।

क्यों झूठ-सच का धन्धा करते हो?

पास होने के बाद मैंने दिल्ली के सदर बाजार में अपना चार्टर्ड अकाउंटेंट का कार्यालय खोला, प्रैक्टिस शुरू कर दी। इसके आठ मास बाद हम फिर आबू में बाबा से मिले। वैसे तो बाबा कहते हैं, मैं लौकिक बातों में रुचि नहीं लेता पर बाबा ने मुझे बुलाया और पूछा, क्या तुमने इम्तिहान पास कर लिया? मैंने बड़े फ़खुर से कहा, हाँ बाबा, कर लिया, पहले प्रयास में ही कर लिया और दिल्ली के बहुत अच्छे स्थान पर प्रैक्टिस भी शुरू कर दी है। ब्रह्मा बाबा ने कहा, ज़रा नज़दीक आओ। मैं बाबा के और नज़दीक चला गया, क्या बाबा का व्यक्तित्व था, क्या चेहरे की रूहानियत थी, बुजुर्ग तो थे ही, तांबे जैसा दहकता हुआ तपस्वी शरीर था। मुझे बोले, तुमको दो रोटी ही तो खानी हैं ना, तो तुम काहे को यह झूठ-सच का धन्धा करते हो, तुम जाकर कोई सरकारी नौकरी कर लो। मैंने उसी समय फैसला कर लिया कि मैं जाते ही प्रैक्टिस बन्द करके नौकरी शुरू करूँगा। हमारे खानदान में किसी ने नौकरी नहीं की थी। दिल्ली जाकर मैंने अपने भाई से कहा, आफिस के सभी चेअर्स, क्लाइंट की अकाउंट बुक्स वापस कर दो, फर्नीचर सेवाकेन्द्र पर भेज दो, फिर मैंने उस आफिस में कदम नहीं रखा और अखबार में चार्टर्ड अकाउंटेंट की नौकरी की वेकेन्सी (रिक्ति) देखकर हाथ से ही अर्जी लिखकर भेज दी।

आज्ञाकारी को सदा मदद

बाबा की शक्ति कार्य कर रही थी। भाखड़ा नंगल में फर्टिलाईजर (उर्वरक) की नई कंपनी खुल रही थी, अभी ग्राउंड में केवल आफिस बनाया था, उसमें इन्टरव्यू (साक्षात्कार) के लिए मुझे बुला लिया गया। मैं चल पड़ा। ट्रेन में मेरे साथ आठ लड़के और थे, वे भी उसी इन्टरव्यू के लिए

जा रहे थे। कंपनी बड़ी थी, उन्हें आठ-दस चार्टर्ड अकाउंटेंट चाहिएं थे। मैं कोने में दुबककर बैठा हुआ इनकी बातें सुन रहा था। वे सभी मेरे से अधिक स्मार्ट लग रहे थे। मुझे नौकरी मिलने की उम्मीद लग नहीं रही थी। पहुँचने पर मेरा इन्टरव्यू चालू हुआ, मुझसे पाँच-छह सवाल पूछे गए। वे सारे सवाल थे चार्टर्ड अकाउंटेंट की किताबों के जिन्हें मैं भूल चुका था क्योंकि अब तो प्रैक्टिस कर रहा था। मुझे उत्तर आ नहीं रहे थे इसलिए उन्होंने भी गर्दन हिलाकर इशारा दिया कि उत्तर ठीक नहीं हैं। अन्तिम सवाल पूछा, तनख्वाह क्या लेंगे। मैंने कहा, जो आप दे देंगे। इसके बाद मैं चुन लिया गया, बाकी सब नहीं लिए गए। वह सरकारी कंपनी नई-नई थी। उनका नियम था, कम से कम तनख्वाह में रखना है। उन लड़कों ने ज्यादा तनख्वाह मांगी थी। बाबा ने कहा हुआ है कि कोई भी बच्चा किसी विशेष बात में मेरी आज्ञा मान ले तो सारी ज़िन्दगी उसकी मदद करता हूँ, इसका सबूत मैं हूँ। कंपनी ने एक महीने बाद डेढ़ गुणा तनख्वाह बढ़ाकर पुनः विज्ञापन दिया। फिर और लोग आए और मेरी तनख्वाह भी स्वतः डेढ़ गुणा हो गई।

हमारी कंपनी की जब भी कहीं नई शाखा खुलती थी तो वह ज़्यादा तनख्वाह देकर पुराने अनुभवी आफिसर्स को वहाँ भेजने की कोशिश करती थी। जब आसाम में कंपनी की शाखा खुली और मुझे वहाँ जाने की ऑफर आई तो मैंने बाबा से पूछा, बाबा ने कहा, नहीं, बाबा आबू से कहीं जाता है क्या, तुम काहे को जाते हो। इस प्रकार मैं 17 साल नंगल में ही रहा।

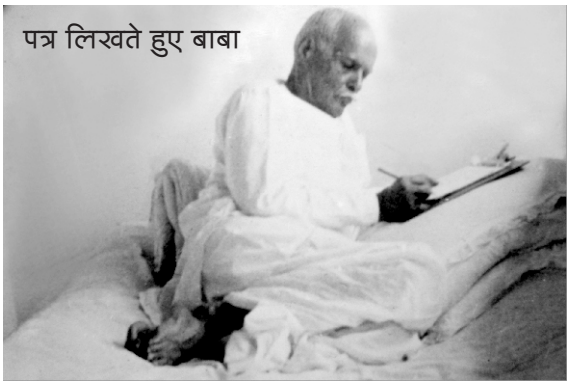
पत्र लिखते हुए बाबा

सतयुग में विमान मिलेगा

एक बार मैंने सोचा, मैं कार खरीद लूँ तो मर्जी अनुसार सेवार्थ आना-जाना कर सकूँगा, समय बच जाएगा। मैंने बाबा से पूछा, बाबा ने हाँ कर दी। मैंने कार खरीद ली। चण्डीगढ़ में प्रदर्शनी आयोजित हुई थी। मैं कार से वहाँ पहुँचा। कार को बाहर पार्क कर अन्दर प्रदर्शनी में गया। हर 15 मिनट बाद मुझे ख्याल आता था, बाहर जाकर कार को देख आऊँ, उस पर कोई बच्चा ख़रोंच तो नहीं डाल रहा। मैंने कहा, यह तो मैं बन्धन में आ गया। भाई-बहनों ने भी दूरी बना ली कि यह तो कार वाला है। उन दिनों की स्थिति ऐसी थी, आज तो कार रखना साधारण बात हो गई है, कार वाले को देखकर सब्जी वाला भी ज्यादा पैसे मांगता था। एक साल रखा, फायदा तो था पर कष्ट भी ज़्यादा था। इसलिए बाबा से पूछा, बाबा, मैं कार बेचना चाहता हूँ। बाबा ने कहा, बेच दो, तुमको सतयुग में विमान मिलेगा।

बाबा ने तनख्वाह वापस भेज दी

भारत में प्रथा है कि पहली तनख्वाह लोग अपने गुरु को भेजते हैं। मैंने भी पहली तनख्वाह का ड्राफ्ट बनाकर रजिस्ट्री करवाकर बाबा को भेज दिया। बाबा ने वह ड्राफ्ट वापस भेज दिया और मुझे कहा, किसके कहने से भेजा? मैंने कहा, मुरली में श्रीमत मिलती है, आप ही कहते हो कि मेरे हाथ में है किसका भाग्य बनाऊँ, किसका ना बनाऊँ। आपकी श्रीमत से ही मैंने नौकरी की है, यह उसी नौकरी की ईमानदारी की कमाई है, तो क्या आप मेरा भाग्य नहीं बनाना चाहते, ऐसे कई मुरली के प्वाइंट्स (ज्ञान बिंदू) मैंने लिखकर भेज दिए। बाबा ने लिखा, बच्चे, पत्र पाया, हर्षाया, इस बारी रख लेता है बाबा,

आगे से नहीं भेजना, अपने आप ही इसे सेवा में लगाओ। मेरी आयु उस समय 21 साल थी। ऐसी कोई धार्मिक संस्था इस दुनिया में नहीं होगी जिसे आप पैसे दें और वह वापिस कर दे। मेरे दिल पर बहुत असर पड़ा कि क्या ऐसी संस्था भी हो सकती है, इससे मुझे बहुत शक्ति मिली।

उन दिनों परिवार के परिवार ज्ञान में चलने वाले थोड़े थे। कुछ सिन्धी परिवार थे बाकी बहुत कम। एक बार बाबा ने हमारे पूरे परिवार को पूना भेजा और कहा, वहाँ सबसे मिलो ताकि कोई यह न समझे कि भगवान केवल सिन्धियों के पास ही आता है। सिन्धियों के अलावा दूसरे परिवार भी ज्ञान में चलते हैं, आपके जाने से उन्हें मालूम पड़ेगा।

बाबा-मम्मा के साथ सैर

मुरली क्लास के बाद चेम्बर में हम सब बच्चे परिवार के तौर पर बाबा के साथ बैठते थे। बाबा हम से बात करते हुए कहते थे कि देखो, शिवबाबा यह कह गया, यह कह गया अर्थात् मुरली पर चर्चा करते थे। फिर मम्मा सीटी बजाती थी, सब इकठ्ठे हो जाते थे। कपड़े के बूट पहनकर भाई और बहनें फिर सैर करने जाते थे बाबा-मम्मा के साथ। बीच-बीच में बाबा खड़े होकर पूछते थे, शिवबाबा याद है? कुछ ईसाई पादरी और नन्स भी घूम रहे होते थे। उन्हें देख बाबा कहते थे, देखो, ये शान्ति में घूमते हैं, एक को याद करते हैं, नन बट वन। हमें बारी-बारी बाबा का हाथ पकड़कर चलने का सुअवसर मिलता था। हाथ पकड़ने में बहुत खुशी होती थी, कोई-कोई मातायें गीत भी गा लेती थी।

ज्ञान की ही बातें करते थे

शाम को चाय पिलाने के लिए बाबा कभी किसी पहाड़ी पर, कभी किसी पहाड़ी पर ले जाते थे और टेढ़े रास्ते से ले जाते थे, फिर कहते थे, शिवबाबा को याद करते-करते आओ, कुछ नहीं होगा। फिर खुली जगह में बैठकर हम चाय पीते थे। बाबा ज्ञान तो देते ही रहते थे, ज्ञान के बिना और कोई बात नहीं करते थे। कई बार बाबा नक्की झील पर ले जाते थे। वहाँ राम मन्दिर के पुजारी को भी बुला लेते थे, पास बिठाते थे, वह बड़ा खुश होता था। कोई भाई-बहन गीत गाते थे, तो कभी बाबा गीत-कविता सुन लेता था, कभी यह भी कहता था, इनमें कोई कमाई नहीं है। बाबा को याद करो, इसमें कमाई है।

सम्पादक भव का वरदान

बाबा त्रिकालदर्शी हैं, उनके मुख से जो बात निकल जाती है, वह पूरी जरूर होती है। चाहे 10 साल बाद पूरी हो या 20 साल बाद। पहली बार बाबा ने जब पत्रिका निकालने के लिए कहा, तो मेरी ड्यूटी लगाई कि पत्रिका को छपवाना है और वरिष्ठ भ्राता जगदीश जी को लेख लिखने हैं। मैं भी कभी-कभी कुछ लिख देता था। पहली पत्रिका तैयार हुई। उसका कागज़ खरीदना, छपवाना, प्रूफ पढ़ना, फोटो बनवाना यह मेरी ड्यूटी थी। मैं चार्टर्ड अकाउंटेंसी भी करता था इसलिए मेरा नाम संपादक या सहसंपादक नहीं लिखा जा सकता था। बाबा दिल्ली में आए और कमला नगर सेन्टर की खुली छत पर बच्चों से मिले। जगदीश जी ने कहा, चलो बाबा को पत्रिका दिखाते हैं। उस वक्त उसका नाम होता था त्रिमूर्ति मासिक, जिसका नाम बाद में ज्ञानामृत पड़ा। जगदीश जी ने बाबा को पत्रिका दिखायी। बाबा ने कहा, यह मेरा संपादक बच्चा है। जगदीश भाई ने मेरी तरफ इशारा किया कि बाबा, इन्होंने छपवाया और बनवाया है। बाबा ने कहा, यह भी मेरा संपादक बच्चा है। बाबा ने कह दिया, मैंने सोचा, मैं संपादक तो हूँ नहीं। फिर सवा साल के लिए जगदीश जी विदेश गये। तब मैंने नौकरी करते-करते पत्रिका अपने स्टेनो से लिखवायी, टाइप करवाई और लगातार सबको भिजवाता रहा। मैंने सोचा, मैं संपादक बन गया, भले ही मेरा नाम संपादक के रूप में नहीं आया। मेरे नौकरी छोड़ने पर बाबा ने प्युरिटी पत्रिका निकलवाई जिसका मैं सम्पादक बना। इस प्रकार बाबा ने अपने वरदान को साकार किया। ❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 3

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले दो लेखों से हम आदर्श एवं सुचारु राज्यव्यवस्था के बारे में विचार कर रहे हैं, उसी संदर्भ में आज यह तीसरा लेख लिख रहा हूँ। आदर्श व्यवस्था को समझने के लिए इतिहास को समझना जरूरी है और इसमें यज्ञ के छपे हुए कल्पवृक्ष तथा गोले के चित्र बहुत मददगार बन सकते हैं क्योंकि इन चित्रों में पाँच हजार वर्ष का इतिहास संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इतिहास के बारे में कुछ बातें समझने की ज़रूरत है क्योंकि इतिहास व ड्रामा एक भी गलती को माफ नहीं करते हैं।

मिसाल के तौर पर, शास्त्रों में लिखा है कि कुम्भकर्ण ने छोटी-सी गलती की और इन्द्रासन के बजाय निद्रासन मांग लिया। राजा दशरथ ने युद्ध के मैदान में रानी कैकेयी को दो वरदान दिये। ये दोनों गलतियाँ नहीं होतीं तो रामायण कुछ और ही प्रकार से होती। इसी प्रकार महाभारत में भी राजा द्रुपद के दरबार में द्रौपदी के स्वयंवर के समय कर्ण जब मत्स्यभेदन करने खड़ा हुआ तब यदि राजमाता कुंती ने कह दिया होता कि कर्ण सूतपुत्र नहीं परंतु सूर्यपुत्र है और वह मेरा पुत्र है या हस्तिनापुर के महल में द्रौपदी ने ये शब्द नहीं कहे होते कि अंधे का पुत्र अंधा, तो महाभारत का स्वरूप भी दूसरा ही होता और इतिहास भी कुछ अलग ही होता।

इसी प्रकार से यूरोप के इतिहास में वर्णित है कि नेपोलियन ने वाटरलू के युद्ध के मैदान में यह समझा कि ऑस्ट्रिया की सेना अब तक युद्ध के मैदान में नहीं आई है इसलिए उसने अपनी 1/3 सेना को पूर्व में भेज दिया, उसने अगर यह गलती ना की होती तो वाटरलू के युद्ध का परिणाम कुछ और ही होता। ऐसे ही द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर ने रशिया के साथ युद्ध करने की गलती नहीं की होती तो परिणाम कुछ और ही होता।

इन सब बातों के आधार पर सिद्ध होता है कि राज्यव्यवस्था में छोटी सी भी गलती आगे जाकर बहुत बड़ी भूल साबित होती है और उसके कारण राज्यव्यवस्था के कारोबार में बहुत बदलाव होता है इसलिए बाबा ने सतयुगी दैवी राज्य कारोबार के बारे में यही कहा है कि वहाँ देवतायें 16 कला सम्पूर्ण होंगे। देवताओं के राज्य कारोबार में कोई भी प्रकार की छोटी-बड़ी गलती नहीं होगी।

राज्य व्यवस्था में अनुशासन के बारे में भी बहुत ही ध्यान रखना पड़ता है। अनुशासन की कोई भी गलती होने से इतिहास बदल जाता है। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश साम्राज्य का कारोबार बहुत ही व्यापक था और यह कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य पर सूर्य कभी अस्त नहीं होता है क्योंकि उन्होंने दुनिया के अधिकतर देशों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था और उसे चलाने के लिए बहुत अच्छी तरह से व्यवस्था की थी। जैसे कि इंग्लैण्ड में दोपहर 12 बजे पार्लियामेन्ट शुरू होती थी तो भारत में शाम के 5.30 बजे वित्तमंत्री बजट पेश करता था अर्थात् ब्रिटिश पद्धति के अनुसार ही उन्होंने सभी देशों में अपना राज्यकारोबार किया। उन्होंने अपने आधिपत्य के सभी देशों में निमित्त शासन करने के लिए वायसरॉय को नियुक्त किया और उनका कार्यकाल पाँच वर्ष से अधिक नहीं रखा। उस समय हवाई जहाज आदि नहीं थे और समुद्र के द्वारा अफ्रीका से घूमकर भारत आना होता था जिसमें काफी समय लग जाता था फिर भी उन्होंने किसी भी वायसरॉय को पाँच वर्ष से अधिक एक देश में नहीं रखा वह चाहे भारत हो या कैनेडा, ऑस्ट्रेलिया या अन्य कोई भी देश हो क्योंकि उन्हें डर था कि अगर कोई भी वायसरॉय ज्यादा समय एक देश या एक स्थान पर रहेगा तो उसकी जड़ें मजबूत हो जायेंगी और फिर वह वहां का राजा

बन जायेगा और परिणामस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट हो जायेगा। ब्रिटिश राज्य कारोबार की पद्धति समझने और सीखने जैसी है।

भारत में मराठा साम्राज्य की राजधानी पुणे थी परन्तु उन्होंने वडोदरा में गायकवाड, इन्दौर में होल्कर और ग्वालियर में सिंधिया को सूबेदार के रूप में नियुक्त किया था। इन तीनों स्थानों पर जिनको नियुक्त किया था उनकी जड़ें वहाँ मजबूत हो गईं और वे वहां के राजा बन गये, साथ-साथ वहां पर वंश परंपरा भी स्थापित हो गई परिणामस्वरूप मराठा साम्राज्य को बहुत क्षति हुई और वह बिखर गया। पुणे के पेशवा अगर सोच-समझकर सूबेदार रखते और सत्ता अपने हाथ में रखते तो उनका कारोबार बहुत ही स्थिर रूप में होता और मराठा साम्राज्य का इतिहास कुछ और ही होता। अंग्रेजों ने विभिन्न देशों में राज्य कारोबार किया परन्तु इंग्लैण्ड में उनकी सत्ता मजबूत थी। चुनाव भी होते रहे, पार्टियाँ भी बदलती रहीं परंतु फिर भी उन्होंने राज्य की कमान सच्चाई और ईमानदारी से सम्भाली। विभिन्न स्थानों पर आजादी प्राप्त करने के लिए अनेक विप्लव भी हुए, जैसे भारत में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हुआ परंतु इन सब बातों का सामना उन्होंने किया और फलस्वरूप उनकी सत्ता सदा ही मज़बूत रही।

उपरोक्त लिखी हुई बातों से एक बात सिद्ध होती है कि जो भी राज्यव्यवस्था के निमित्त बनते हैं उन्हें अपने साथी और साधनों की कुशल व्यवस्था करनी चाहिए और इसी व्यवस्था को किताबों में कहा गया है रिसोर्स मैनेजमेन्ट (Resource Management) अर्थात् अपने साथियों और साधनों का 100 प्रतिशत सम्पूर्ण (perfect) रूप में प्रबंधन करना। अगर साधनों के संचालन में, उपयोग में, उनकी व्यवस्था में थोड़ी भी भूलें हुईं तो उनके आधार पर राज्यव्यवस्था करने वालों पर बदनामी का टीका लग सकता है। जैसे कि भारत की वर्तमान राज्यव्यवस्था में देखते हैं कि राज्यकारोबारी साधनों का सुचारु रूप से उपयोग नहीं करते और योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्तियों को नियुक्त नहीं करते जिस कारण साधनों के वितरण (Distribution) में फर्क पड़ रहा है। भ्रष्टाचार आदि के कारण राज्य कारोबार अच्छी रीति नहीं होता और अच्छे व्यक्तियों की नियुक्ति अच्छे स्थानों पर नहीं होती ।

लोकतंत्र के बारे में जिन भी बड़े-बड़े लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये उनमें से एक प्रो. डायसी ने अपनी किताब में लिखा है कि Democracy rarely permit a country to be governed by its ablest man. अर्थात् लोकतंत्र में जो राज्यव्यवस्था है उसमें अच्छे एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों को कारोबार में अग्रिम स्थान नहीं मिलता। उन्होंने यह भी लिखा है कि लोकतंत्र में बाहुबल और धनबल का कारोबार होता है। जो श्रेष्ठ व्यक्ति हैं वे बाहुबल और धनबल के लालच में नहीं आते हैं जिस कारण गुंडागर्दी या हिंसक व्यवहार करने वाले राज्यव्यवस्था के कारोबार में आ जाते हैं परिणामस्वरूप राज्यव्यवस्था दूषित हो जाती है और कभी-कभी लोकतंत्र के बदले वोटतंत्र (Vote Power) ही स्थान लेता है जिसके लिए कहा गया है कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। इस प्रकार योग्य व्यक्ति आगे नहीं आते और इस कारण राज्यव्यवस्था भी योग्य रीति से नहीं होती।

दूसरी बात यह भी है कि वंश परंपरा के आधार पर जब यह कारोबार होता है तो कभी-कभी अच्छे व्यक्ति राज्यकारोबार में आगे नहीं आ सकते। इन बातों के आधार पर बापदादा के यज्ञ का कारोबार हम देखें तो बाबा ने अपने साथियों को योग्य बनाया और इसलिए ही 1937 से 1950 तक अर्थात् भारत आने तक सबको ज्ञान, योग और धारणा की पूरी शिक्षा दी और इन परीक्षाओं में जब सब उत्तीर्ण हुए तब ही बाबा ने उन्हें सेवा के लिए भेजा।

बाबा के सामने भी वंश परंपरा का प्रश्न हो सकता था जैसे कि ब्रह्मा बाबा

की लौकिक पुत्री दादी निर्मलशांता जी तथा पुत्रवधू दादी बृजइन्द्रा जी बहुत ही होशियार एवं व्यवस्था के कार्य में निपुण थे परंतु 1965 में जब मातेश्वरी जी अव्यक्त हुए तब बाबा ने दिनांक 1-4-1966 की साकार मुरली में खुद अपने हाथों से लिखा कि दादी प्रकाशमणि जी एवं दीदी मनमोहिनी जी की, मुख्य संचालिका तथा सह मुख्य संचालिका के रूप में नियुक्ति की गई है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों के द्वारा ही सर्वश्रेष्ठ कार्य हो सकता है यह बात सिद्ध कर दिखायी। ब्रह्मा बाबा ने दोनों दीदी-दादी को भी समय-प्रति-समय यज्ञ संचालन की बातों से अवगत कराकर यज्ञ संचालन के लिए सौ प्रतिशत सम्पन्न बनाया और उनके प्रशासन का परिणाम हम सभी ने देखा कि कैसे दीदी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि के समय यज्ञ का विस्तार त्वरित गति से हुआ।

जब ज्ञान सरोवर और शान्तिवन की स्थापना और रचना हो रही थी तो दादी प्रकाशमणि जी स्वयं जाकर खड़े रहते थे तथा कुशल व्यवस्थापन के लिए पूर्ण दिशानिर्देश देते थे कि कौन-कौन से विभाग बनाने हैं, कौन कहाँ बैठेगा, कैसे कारोबार करेगा और फिर सब बातों का निर्णय कर योग्य व्यक्तियों के हाथ में कारोबार सौंप दिया। साथ ही साथ समय-प्रति-समय उन्हें मार्गदर्शन देना, उनके साथ लेन-देन करना, इस प्रकार यज्ञ का संचालन बहुत ही सुचारु एवं श्रेष्ठ रीति से किया। उनके इस कुशल व्यवस्थापन की स्वयं अव्यक्त बापदादा ने भी सराहना की।

सुचारु व्यवस्था के लिए साधनों के व्यय के बारे में भी अगर ध्यान नहीं दिया तो भी बहुत नुकसान हो सकता है। उदाहरणत: ब्रह्मा बाबा एक बार मुम्बई में थे तब उन्हें मधुबन से पत्र आया कि बाबा, बारिश का मौसम शुरू होगा तो यहां जो मजदूर काम करते हैं उन्हों के लिए कुछ छातों की जरूरत है। तो बाबा ने मुझे कहा कि मैं कल सुबह क्लास में बच्चों की परीक्षा लूँगा और देखूंगा कि खरीद करने की समझ कौन-से बच्चे में कितनी है। दूसरे दिन बाबा ने क्लास में सभी से कहा कि बच्चो, मधुबन में कामगारों के लिए छातों की ज़रूरत है तो आप सभी 1-1 छाता सैम्पल के रूप में लेकर आना। मुरली के बाद मैंने बाबा से कहा कि बाबा, कल तो आपके पास 125-150 छाते आ जायेंगे तो बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, आप नहीं जानते हो मेरे बच्चों को, मैं ही जानता हूँ। दूसरे दिन हमने देखा कि क्लास के सिर्फ 8 भाई-बहनें ही छाता लाये थे। बाबा ने देखा कि एक भाई 175 रुपये का सुन्दर फैन्सी छाता लाया था। बाबा ने उससे कहा कि बच्चे, इतना महंगा छाता क्यों लाये तो उस भाई ने कहा कि बाबा, आपने कहा था ना, इसलिए। एक व्यक्ति के सिवाए सभी फैन्सी छाते ही लाये थे। केवल एक भाई 8 रुपये का, लकड़ी के हैण्डल वाला बड़ा-सा मजबूत छाता लाया था तो बाबा ने उससे पूछा कि बच्चे, आप इतना सस्ता छाता क्यों लाये तो उस भाई ने कहा कि बाबा, मैं यह छाता आपके लिए नहीं, मजदूरों के लिए लाया हूँ। मजदूरों का काम काफी मेहनत वाला होता है और उन्हें ऐसा ही मजबूत और बड़ा छाता चाहिए। साथ-साथ लकड़ी का हैण्डल है जो टूटेगा नहीं, प्लास्टिक का जल्दी ही टूट जायेगा इसलिए यह छाता लाया। बाबा ने कहा कि इस बच्चे में यह समझ है कि किसके लिए कौन-सी और कैसी चीज खरीदनी चाहिए। इसके बाद यज्ञ के लिए मुम्बई से जो भी खरीदारी का कारोबार हुआ वह बाबा ने उस बच्चे के हाथ में दिया। इस प्रकार योग्य व्यक्ति को परखकर बाबा कारोबार उनके हाथ में देते थे।

हम सभी ब्रह्मावत्सों को भी योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करने का और साधनों के ऊपर व्यर्थ खर्च न करने का बहुत ध्यान रखना है। जैसे व्यर्थ संकल्प ना हों इसका ध्यान रखते हैं वैसे ही व्यर्थ खर्च भी ना हो इसका भी ध्यान रखना है। यह बात अगर हम अभी सीखेंगे तब ही ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था सम्पन्न सुचारु रूप से कार्य कर सकेंगे।

❖

बाबा ने वतन में पढ़ाए ज्ञान के पाठ

● ब्रह्माकुमारी अचल, चण्डीगढ़

साकार बाबा से मेरी पहली मुलाकात सन् 1953 में मुम्बई में हुई थी। उस समय अभी सर्विस का प्रभाव नहीं था। बाबा का बहुत बड़ा ऑपरेशन हुआ था। मैं उनसे मिलने के लिए गई तो कमरे में गहन सन्नाटा छाया हुआ था। शान्ति का प्रवाह इतना था कि मैं खड़ी-खड़ी बाबा को देख भी रही थी और अव्यक्त स्थिति में समाती भी जा रही थी। पाँव भी हैं, नयन भी हैं लेकिन शरीर की सुधबुध भूल रही हूँ। मैं बहुत प्यार से बाबा से मिली, ऐसे महसूस कर रही थी कि मेरे सामने श्रीकृष्ण का लवली रूप है। इतना बड़ा बाबा का शरीर और मैं देख रही हूँ छोटा श्रीकृष्ण का रूप। भक्तिमार्ग में मुझको श्रीकृष्ण से बहुत प्यार था। मेरी आश थी कि भगवान आप मेरे को एक बार साक्षात्कार करा दो श्रीकृष्ण का। भक्ति में खूब आराधना करती थी और गीत गाती थी। अब वो घड़ी आ गई जबकि प्रत्यक्ष रूप का साक्षात्कार बाबा ने करा दिया। मैं आधा घंटा उसी स्वरूप में गुम-सी रही। प्रभु-प्रेम में खोई हुई मैं आत्मा बाबा को, श्रीकृष्ण के रूप में देख करके बहुत आनंद का अनुभव कर रही थी, यह मेरा पहला-पहला अनुभव था।

जब मैं पहली बार ध्यान में गई

ज्ञान में चलने के पूर्व ही बाबा ने मुझे अपना साक्षात्कार करवा दिया था, जो बड़ा ही मनोहारी था। मैंने सफेद वस्त्रधारी ब्रह्मा बाबा को देखा और वो मुझे इशारा दे रहे थे कि बच्ची, चलो मेरे साथ। बाबा ने ये शब्द बोले और बाहर आकर के आसमान की टुकड़ी से पार निकल गये। बाबा को मैंने धरती से उड़ते हुए देखा। आश्चर्य लग रहा था कि भगवान, यह क्या दृश्य आप मेरे सामने ला रहे हो। पाँच तत्त्वों का शरीर है, कैसे ऊपर जा सकता है। उस समय ज्ञान नहीं था कि लाइट के स्वरूप बिगर कैसे जायेंगे, आत्म स्वरूप में टिकने बिगर कैसे जायेंगे। इतना ज़रूर ख्याल आया कि यह कोई साधारण हस्ती नहीं है, जो इस प्रकार से आसमान को पार करके चली गई, कहाँ गई, कुछ पता नहीं। उन दिनों मैं श्री हरगोबिन्दपुर में शिक्षिका के रूप में सेवारत थी, वहाँ यह साक्षात्कार हुआ था। जब अपने घर अमृतसर में आई, बहनों से मिली तो मैंने साक्षात्कार वाले बाबा का चित्र क्लास रूम में देखा। उसे देख गद्‌गद् हो गई। बहनों को कहा, यहाँ जो कुछ भी है मुझको समझाओ। ध्यानी बहन (मम्मा की मौसी) ने मेरे को समझाना शुरू किया। बहुत सरल तरीके से समझाया। समझते-समझते मैं ध्यान में चली गई। ध्यान क्या होता है, कुछ

पता तो था नहीं लेकिन मैं शरीर से अलग होती गई। वतन में चली गई। महसूस हुआ, कोई चीज़ मेरे मस्तक से निकली है और जा रही है, जा रही है। मैं एक घंटा बैठी रही और ऊपर के नज़ारों में बाबा को देखती रही। बहुत सुंदर वातावरण में बाबा को ज्ञान सुनाते हुए देखती हूँ, तो मेरा दिल होता है कि बाबा मैं भी यह सब सुनना चाहती हूँ, बनना चाहती हूँ। बाबा कहते हैं, हाँ बच्ची, आपको भी आगे बढ़ना ही है। यह जैसे पहले दिन ही वरदान मिला।

वतन में कराया सात दिन का कोर्स

फिर बाबा ने कहा, आप इसी समय रोज़ मेरे पास आओ। ठीक तीन बजे बाबा मेरे को बुलाते थे और मैं खुशी-खुशी जाती थी। उस समय तक मुझे कोई ज्ञान नहीं था, योग में कैसे बैठूँ, यह भी नहीं जानती थी लेकिन ऊपर वाले को मेरे को जगाना था, सेवा लेनी थी तो बहुत युक्ति से

मुझे जगाया। दूसरी बार जब ध्यान में गई तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुमको कोर्स मैं कराता हूँ। एक सेकंड में एक बहुत बड़े ब्लैकबोर्ड पर सुनहरी अक्षरों में आत्मा का परिचय आ गया। मैं बड़े ध्यान से उसको पढ़ती गई। बाबा ने कहा, बच्ची, यह पहला पाठ है, तुमको सात दिन बाबा के पास आकर ये पाठ पढ़ने हैं। इस प्रकार कोर्स कराने वाले ब्रह्मा बाबा ने अपना रूप भी दिखाया, अपना परिचय भी दिया और आत्मा का ज्ञान भी समझाया। सात दिन पूरे होते-होते बहुत खुशी होने लगी। घर वाले मेरा चेहरा देखते तो सोचते थे, घंटा-घंटा यह कहाँ गुम हो जाती है, क्या हो गया है इसको? मैं उनको बताती थी कि ऊपर के लोक में लाइट के स्वरूप वाला एक बाबा मिलता है। फिर मैं उनको बाबा का परिचय देती थी जिसे सुनकर उनके नैनों में आँसू आ जाते थे। मैं लगातार सात दिन बाबा के भिन्न-भिन्न रूप देखकर आती रही। लौकिक संबंधी मेरे सामने ऐसे बैठ जाते थे जैसे क्लास वाले बैठते हैं। पूछते थे, आज क्या देख कर आई हो। मैं कहती थी, आज मेरे बाबा ने यह दिखाया है कि बाप का सत्य परिचय क्या है, कहाँ रहता है, बाबा ने अपने निराकारी रूप का ज्ञान दिया है। उस समय ऐसे लगता था जैसे कि बाबा मेरी बुद्धि को टच करके बुलवा रहा है ताकि बाबा का बोला हुआ एक शब्द भी भूले नहीं।

बाबा के सामने गाया गीत

अमृतसर से मुम्बई जाकर बाबा से मिलने की लगन में हम सारी-सारी रात योग करते थे। भक्ति में भी हम प्रभु-प्रेम के गीत गाते थे। जब बाबा के साथ मिलन हुआ तो मैंने गीत गाया, ''देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं, सेवा में बहुमूल्य वस्तुएँ ला-ला तुम्हें चढ़ाते हैं, मैं हूँ एक गरीबनी ऐसी, जो कुछ साथ नहीं लाई, फिर भी साहस कर बाबा मैं आपके पास चली आई।'' बाबा ने बड़े स्नेह से मुझे देखा। मैं भी उस समय रूहानी स्नेह में खोई हुई थी। फिर बाबा बोले, बच्ची, तुम मधुबन जाओ, मम्मा से मिलकर आओ। मैं मधुबन आई, मम्मा से मिली, मुझे ऐसे लगे कि मैं चारों तरफ बाबा को भी देख रही हूँ, मम्मा को भी देख रही हूँ। नया दृश्य था मेरे लिए। बाबा तो उस समय मधुबन में थे ही नहीं, सिर्फ मम्मा ही थी, मम्मा मुझे नए-नए ज्ञान के बिंदु समझाती रहती थीं।

बाबा ने दिया अलौकिक नाम

मैंने बाबा को पहला पत्र लिखा और जवाबी पत्र से ही बाबा ने मेरा नाम बदल दिया। अब जो नाम है यह बाबा का ही दिया हुआ है। फिर बाबा मधुबन में आ गये। बाबा की कमाल थी, कितना स्नेही रूप पर कितना साधारण रूप। बाबा हमारे साथ गेहूँ साफ करते थे। क्या प्यार, क्या सेवा

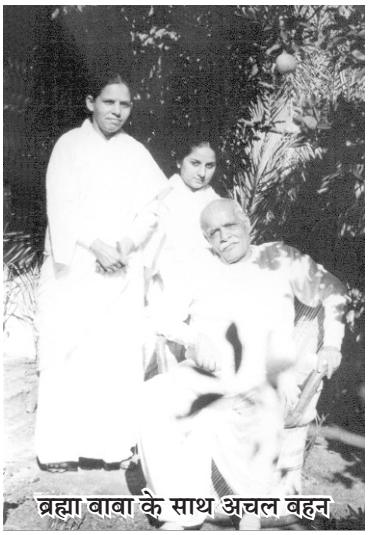
ब्रह्मा बाबा के साथ अचल बहन

की भावना, दिल उछल रहा था। यज्ञ को चलाने वाले इतनी ऊँची हस्ती और इतना साधारण काम कर रहे हैं। हमने कहा, 'बाबा हम कर लेंगे, हम को आ गया है, गेहूँ कैसे साफ करने हैं।' बाबा ने कहा, 'बच्चे, मैं तो ज्ञान भी दूँगा ना, काम भी हो जायेगा और मेरे से आप सुनते भी रहेंगे।' काम पूरा कराके, बच्चों को खुशी में लाने के लिए साथ बिठाकर झूले में झूलाते। आनंद का झूला कैसे झूला जाता है, यह ज्ञान देते। एक-एक कर्म बाबा का ज्ञान और प्रेम से भरा हुआ था, यह हमने अनुभव किया।

हर बच्चे को ऊँचा उठाते थे

मधुबन में जब पार्टियाँ आती थीं, बाबा को बड़ी खुशी होती थी। हमारे पास एक भाई आता था, उस भाई का बाबा के साथ बहुत प्यार था पर उसकी युगल बाबा के चित्र को भी देख कर बहुत नाराज़ होती थी। एक

बार वे दोनों मधुबन आ गए। हमने बाबा को उनके बारे में बता दिया था। बाबा वाणी चला करके बाद में योग कराते थे। जब बाबा ने उस आत्मा को दृष्टि दी, कमाल का दृश्य था, वो रोने लगी, बहुत रोई, दूर बैठी हुई थी, रोती-रोती बाबा के पास आ करके बोली, आप मेरे बाप हो, आप दयालु हो, आप कृपालु हो..... और बाबा की गोद में बैठ गई। बाबा ने कहा, बच्ची, कोई बात नहीं, आपका बाप आपके साथ है। ऐसे मीठी-मीठी बातें करके उसको बदल दिया, वह बाप के प्यार में आ गई। बाबा हर बच्चे की जन्मपत्री जान करके उसे उठाते थे, वह दृश्य निराला और अति प्यारा था। जब सेवाधारी भाई आते थे, बाबा का सेवा लेने का ढंग भी निराला था। ऐसे नहीं, ऑर्डर करके चले गये। सेवाधारी बच्चों के लिए उनके अन्दर प्यार की लहरें उठती थीं। बच्चों ने आधा घंटा काम किया, फिर टोली लेके आते थे, बच्चे ठहरो, ठहरो, पहले यह टोली खाओ। कितनी बार उन बच्चों को देखते, महिमा करते। एक-एक कर्म बाबा का कमाल का था।

भगवान का आदेश सदा सिर-माथे रखा

बाबा को मेरे संस्कारों से ऐसी भासना आती थी कि मैं इस बच्ची को जो बोलूँगा, जहाँ भेजूँगा, इसने ना नहीं करनी है। भक्तिमार्ग के संस्कारों में था कि भगवान मिल जाये, तो और क्या चाहिए, उनको मैं ना कैसे कहूँगी! किसी जगह मेला चल रहा होता, तो बाबा का फोन आता, बच्ची तुमको वहाँ जाना है। बाबा जानते थे, हर बच्चे का भाग्य कैसे बनाना है। हमारे अंदर बाबा के प्रति वफादारी सदा इमर्ज रहती थी। इतना बाबा प्यार देते थे, हम चले जाते थे। कई अनजान स्थानों पर भी भेजा पर कभी संकल्प नहीं आया कि मेरे से सेवा होगी या नहीं होगी। भगवान का ऑर्डर है। उस समय यह नहीं था कि ब्रह्मा बाबा को अलग समझें, शिवबाबा को अलग समझें। ब्रह्मा बाबा ही सब कुछ था हमारे लिए। हर बात हम बाबा से पूछते थे। कभी कहीं सेवा के कार्यक्रम में कठिनाई आ जाती थी तो फौरन बाबा से राय लेते थे। बाबा कहते थे, बच्चे, ड्रामा बना हुआ है, धैर्य के गुण को धारण करना है।

बाबा ने बनाया निर्भय

एक बार अमृतसर में एक बहुत बड़ा समारोह था, एक शंकराचार्य जी आये हुए थे, जगदीश भाई वहाँ भाषण कर रहे थे। हजारों व्यक्ति बैठे हुए थे। जब भाई जी ने बाबा का परिचय देना शुरू किया तो उन्होंने बंद कराने की कोशिश की और कहा, नहीं, नहीं, हम और नहीं सुनेंगे। यह समाचार हमने बाबा को दिया। बाबा ने अति प्यार भरा सुंदर पत्र भेजा और हमें निर्भय बना दिया। अमृतसर में तो इस तरह की बातें होती रहती थीं। बाबा कहते थे, फलक रखो, उत्साह से काम करो, सन्तुष्टता के गुण को धारण करके काम करो, कुछ नहीं होगा।

बाबा की पहाड़ी

साकार रूप में बाबा बच्चों को पहाड़ी पर लेके जाते थे। बाबा ने बच्चों को वहाँ पर तपस्या कराई थी इसलिए नाम पड़ गया बाबा की पहाड़ी। पहले तो बहनों की तपस्या हुई वहाँ पर। फिर पार्टी में जो भी आता था, सोचता था, बाबा की पहाड़ी पर जाना है, बाबा खुद भी ले जाते थे। जब हम को लेके गए तो नशा चढ़ा कि हम किसके साथ चल रहे हैं। बाबा भी प्रश्न पूछते थे, बच्ची, किसके साथ चल रही हो? किसके साथ मिल रही हो? किसके साथ यात्रा कर रही हो? हम ईश्वरीय नशे में, मौन और शान्ति के पहरे में यात्रा करते थे।

निश्चय वाले जीत गए

कभी-कभी बाबा कहते थे, बच्ची, मैं यह टॉपिक देता हूँ, इसके ऊपर बाबा को लिखकर बताओ कि हिन्दू धर्म, सनातन धर्म क्या है? हम लिख करके देते थे, फिर बाबा करेक्शन करके देते थे। कितनी मेहनत साकार बाबा के द्वारा हम बच्चों पर हुई है। लायक बनाने के लिए, कितनी युक्तियाँ रची हैं, याद कर सचमुच नयन भर आते हैं। उन दिनों बेगरी पार्ट भी हमारे सामने था लेकिन बाबा अपने बच्चों को बहुत

सांत्वना देते थे, कहते थे, बच्चे जिसका यज्ञ है वह रक्षक है, वो बच्चों को सब कुछ देगा, सब कुछ खिलायेगा, पिलायेगा, चिंता नहीं करना। इन महावाक्यों में कितना बल था। किसी बच्चे को कोई ख्याल नहीं आता था। शिवबाबा को तो पेपर लेना था बच्चों का कि बच्चे कहाँ तक उस स्थिति में स्थित हैं, घबराहट में तो नहीं आते हैं। जिनके अंदर दृढ़ता थी, बाबा के ऊपर विश्वास था, बाबा के महावाक्य जिनके दिल में समाए हुए थे, उन्होंने कहा, अरे भगवान के लिए कुछ भी सहन करना पड़े, कोई बड़ी बात नहीं, इस निश्चय से जीत गये।

गहन शान्ति का अनुभव

सुबह की क्लास में एक घंटा, चार से पांच बजे तक बाबा खुद आकर योग कराते थे संदली पर बैठ करके, फिर क्लास कराते थे। योग और क्लास कराने के बाद, बाबा पाण्डव भवन के आंगन में जाकर खड़े हो जाते थे। फिर हम सब क्लास वाले भी जा के खड़े हो जाते थे। उस समय का जो दृश्य होता था, जो जहाँ खड़ा है, वहीं खड़ा है, जैसे कोई शान्ति की शक्ति घेराव दे करके खड़ी है। बाबा का एक-एक प्रकम्पन जैसे छू रहा होता था दिल को कि इतनी ऊँची हस्ती और इस प्रकार से हम बच्चों को शान्ति का अनुभव करा रहे हैं। जब बाबा के कमरे में कुछ पूछने जाते थे, भूल जाते थे। हम भी फरिश्तों की तरह बैठ जाते थे। शान्ति की शक्ति का अनुभव करते थे। महसूस होता था कि बाबा की इस समय की स्टेज बहुत ऊँची है। उस अवस्था में थोड़ा ही समय बाबा रहे। फिर अव्यक्त हो गए। जब बाबा को अव्यक्त होना था तब हम मधुबन में ही थे, पांडव भवन में सुबह क्लास में बाबा के सामने बैठे हुए थे, बाबा बड़ी शक्तिशाली दृष्टि दे रहे थे, एकदम सन्नाटा था। बाबा ने हम बच्चों के लिए इतनी मेहनत की है, हम उनके लिए कुर्बान जाएँ, वारी जाएँ, आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार हो करके हम अगर सेवा करते हैं तो बाबा कहते हैं, हिम्मते बच्चे मददे बाप। बाप की मदद हम तब ही ले सकेंगे जब हम उनकी आज्ञाओं का दिल से पालन करेंगे। ❖

मास्टर दाता बनो

ब्रह्माकुमार गुलशन, करावल नगर, दिल्ली

माँगते-माँगते 2500 साल बीत गए, कभी लक्ष्मी से धन माँगा तो कभी सरस्वती से ज्ञान। कभी बरसात के लिए इन्द्र को पूजा तो कभी धूप के लिए सूर्य को, हम स्वयं को भिखारी ही समझ बैठे थे। कभी ख्याल भी न था कि हम भिखारी नहीं हैं। स्वयं वरदाता बाप ने हमें बताया है कि तुम्हें माँगना नहीं अपितु मास्टर दाता बन सर्व की इच्छाओं की पूर्ति करनी है।

हर एक आत्मा में कोई न कोई विशेषता होती ही है। खोजें स्वयं में कि क्या है हममें खास। उसी खास का दान करने से उसमें विशेषज्ञ बनेंगे। दे वही सकता है जिसके पास भरपूरता है। सूर्य से ही प्रकाश की आश की जाती है, तारों से नहीं। स्वयं वरदाता ने हमसे आश लगायी है कि हम मास्टर दाता बन सर्व को दान दें। उन्होंने हमें जगाया है कि हम रोडपति नहीं, करोड़पति हैं। हम तो अनजान थे कि हमारे पास क्या और कितना है। चाहे कितनी भी मरखनी गाय हो, सुबह होते ही यदि दूध दुहने में देर हो जाये तो रंभाना शुरू कर देती है। इतनी आतुरता होनी चाहिए देने की। निर्णय कर लें कि बनना क्या है? यदि लेने की आशा रहेगी तो प्रजा में चले जाएंगे। जब संस्कार देने के होंगे तभी तो राज्य चलाएंगे।

समय चढ़ाई का है, लेते ही रहेंगे तो भारी हो जाएंगे। फिर चढ़ने में थकावट होगी, परिश्रम भी लगेगा इसलिए देकर हलके हो चढ़ते चलो। विकर्मों का बोझा बाप को दे दो और खजानों को बाँटते चलो। चढ़ जाने के बाद सब मिल जाएगा। तो देवता यानि दे = देने, व = वाली, ता = ताली अर्थात् देने वाली ताली बन खजानों की तिजोरी खोलो। ❖

नवजीवन दाता मेरा बाबा

● ब्रह्माकुमारी प्रेम, हरिद्वार

पहले-पहले जब हम सृष्टि पर आये थे, पावन थे। पार्ट बजाते-बजाते शक्तिहीन हो गये तब शिवबाबा फिर से आये हैं। बाबा ने आकरके नई रचना का आरंभ किया और उसका माध्यम ब्रह्माबाबा को बनाया। ब्रह्मा बाबा को ब्रह्मा बाबा कहते ही तब हैं जब उनमें शिवबाबा हैं। दोनों ने बच्चों को साकार रूप से ऐसी पालना दी जो हम नए बन सके अर्थात् हमारे पुराने तमोगुणी संस्कार, स्वभाव में परिवर्तन होने लगा। हमने शुरू से ही बाबा की पालना ली और यही समझ करके ली कि भगवान हमारी पालना कर रहे हैं। ब्रह्मा बाबा जो भी कर रहे हैं वह शिवबाबा ही कर रहे हैं क्योंकि सृष्टि को बदलना, आत्माओं को पावन बनाना यह कार्य शिवबाबा का है। यह शिवबाबा है, यह ब्रह्मा बाबा है, यह हमारे अंदर विचार आया नहीं। एक बार बाबा से मैंने प्रश्न पूछा, बाबा, आप भक्तों को हनुमान जी का, गणेश जी का साक्षात्कार क्यों कराते हैं जबकि ये प्रतीकात्मक स्वरूप हैं। साक्षात्कार से भक्तों की भावना ज्यादा बैठ जाती है, फिर वे और अधिक पूजा करने लग पड़ते हैं। बाबा ने कहा, बच्ची, साक्षात्कार तो शिवबाबा कराते हैं। आधाकल्प भक्तिमार्ग इसी भावना के आधार पर चलना है इसलिए बाबा भक्तों को साक्षात्कार कराते हैं। अगर साक्षात्कार ना करायें, तो आधाकल्प भक्तिमार्ग का चलना संभव ना हो पाये।

बाबा का एक-एक कर्म अनुकरणीय था।

साकार बाबा ने यज्ञ की आदि से लेकर बच्चों को अपने कर्मों द्वारा सबकुछ सिखाया। बाबा का एक-एक कर्म अनुकरणीय था। पास रहते थे तो सुबह से लेकर रात्रि तक की बाबा की पूरी दिनचर्या देख लेते थे। बाबा ने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ गंवाया नहीं। हर समय बाबा आत्माओं की सेवा, यज्ञ-सेवा या यज्ञ के स्थूल कार्यों में लगे रहते थे। हालांकि बाबा की 60 साल की आयु में शिवबाबा उनके तन में आये, फिर भी ब्रह्मा बाबा सेवा ऐसे करते थे जो युवा भी थक जाए पर बाबा नहीं थकते थे। आश्रम का छोटे से छोटा कार्य भी बाबा अपने हाथ से करते थे। हम सब्जी काटने बैठे हैं, बाबा भी आ करके सब्जी काटते थे। हम बच्चे कहते भी थे, बाबा, यह काम हम कर लेंगे। बाबा कहते थे, नहीं, तुम करोगे, तुम्हारा भाग्य बनेगा, मैं करूँगा, मेरा भाग्य बनेगा। बाबा ना कभी गुरु की तरह गद्दी पर बैठे, ना गुरु की तरह बच्चों के साथ व्यवहार किया। वृद्धावस्था है यह भी भान नहीं, मैं बड़ा हूँ यह भी भान नहीं। बाबा इतने देही अभिमानी थे जो हमेशा समझते थे, मैं यज्ञ की सेवा करने वाला हूँ। मैंने तो जो कुछ सीखा है वह बाबा से ही सीखा है। बाबा मुझे अपने पास बिठा लेते थे। लोग बातचीत करने आते थे, प्रश्न पूछते थे, कोई अपनी समस्याएँ सुनाते थे। जब वो चले जाते थे, बाबा मुझसे पूछते थे, बच्चे, आपने क्या समझा। बहुत छोटी थी मैं, समस्याएँ भी नहीं समझती थी। पर जितना समझती थी उतना बाबा को सुनाती थी। ट्रेनिंग देने की बाबा की यही विधि थी। बाबा ने जो सिखाया कि कैसे सब लोगों को सन्तुष्ट किया जा सकता है, आज दिन तक वही हमारे काम आ रहा है।

बाबा ने माला बनाई

एक दिन बाबा कहते हैं, बच्ची, तुमको पता है, माला में कौन-कौन आयेगा? उस समय जो सेवाओं में

दौड़भाग करने वाले लोग थे, मैंने उनमें से एक का नाम बता दिया। बाबा कहते हैं, नहीं, नहीं इसमें नाम-रूप की बास है, वो नाम रिजेक्ट हो गया। उसके बाद बाबा ने दो-तीन नाम बोले और कागज़ पर लिखे। लिखने के बाद बाबा बोले, बच्चे, एक और नाम बताओ। मैंने जो दूसरा नाम लिया वो भी रिजेक्ट हो गया। बाबा ने कहा, नहीं, नहीं, यह भी माला में आने लायक नहीं है। बाद में सारे नाम लिख करके बाबा ने रख लिये और कहा, 'दीदी को दिखाऊँगा, आज माला बनाई है हमने'। थोड़े समय के बाद मालूम नहीं बाबा को क्या विचार आया, कागज फाड़ दिया। बाबा की इस सारी प्रक्रिया का लक्ष्य था मेरी समझ को देखना और मुझे यज्ञ की महान आत्माओं का परिचय कराना।

बाबा ने दिया नया जीवन

बचपन से लेकर वे मेरी शारीरिक आयु सिर्फ 18 वर्ष बताई जाती थी। मैंने इच्छा प्रकट की, मैं बाबा की सेवा में लगना चाहती हूँ। लौकिक परिवार में से किसी ने इस इच्छा का विरोध नहीं किया। दादी जानकी जी उन दिनों अमृतसर में रहते थे। हमारे परिवार वालों ने दादी जानकी को कहा कि जब यह 18 वर्ष की होने वाली हो तो इसे मधुबन बाबा के पास भेज देना ताकि यदि जाये भी तो हमें यह सन्तुष्टता रहे कि बाबा की गोद में गई। जब 18 वर्ष की होने वाली थी तब दादी जानकी ने पूछा, 'मधुबन जाओगी?' मैंने सोचा, यह तो कोई पूछने की बात ही नहीं है, इससे अच्छी बात कौन-सी है, बाबा के पास अवश्य जाऊँगी। दादी ने कहा, अच्छा, तुम वहाँ दो मास तक रह लेना। मुझे बहुत-बहुत खुशी हुई कि दो मास मधुबन रहने का मौका मिलेगा। उसके पीछे कारण क्या है, वो मुझे पता नहीं था। मधुबन आ गई। जब जीवन का समय पूरा होने वाला था, उस दिन सवेरे से ही होश गुम हो गया। बाबा ने कई डाक्टर्स बुलाये, दिखाया, बाबा को सब पता था। आखिर रात्रि को 12.00 बजे डाक्टर यह कह करके चला गया, 'अगर सुबह तक इसमें सांस रह जाये तो मुम्बई ले जाना, हमें कुछ समझ में नही आ रहा है'। विश्वकिशोर दादा ने यह सब बाबा को बताया। उस समय बाबा ने कहा, अच्छा बच्चे चलो, मैं बच्ची को जीयदान दूँगा। बाबा अपने बेड से उठ करके मेरे बेड के सामने कुर्सी डालकर बैठ गये। कितना समय बैठे रहे, मैं नहीं जानती। बहुत समय के बाद मुझे ऐसा भान आया जैसे कि मैं सपने में ब्रह्मा बाबा को मेरे बेड के सामने बैठे देख रही हूँ। जब और ज्यादा चेतना आई तो लगा कि यह सपना नहीं, सच है, बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं। संदेशी दादी साथ खड़े थे। मुझे

ब्रह्मा बाबा के साथ प्रेम बहन

अहसास हुआ कि बाबा बैठे हुए हैं, मैं लेटी हुई हूँ, यह तो कोई कायदा नहीं है। मैंने उठने की कोशिश की पर मैं उठ नहीं पाई। बाबा ने हाथ के इशारे से कहा, लेटे रहो। बाबा मुझे दृष्टि देते रहे और मैं बाबा की दृष्टि लेती रही। तभी बाबा ने कहा, बच्ची, पुराना जीवन पूरा हुआ, आज से नया जीवन शुरू हुआ। मुझे समझ में नहीं आया कि बाबा ने ऐसा क्यों कहा? वास्तव में मैं 18 घंटे बेहोश रही थी। सब डाक्टर्स ने उम्मीद छोड़ दी थी। तब बाबा ने मुझे ऐसा जीयदान दिया जो आज दिन तक मैं ईश्वरीय सेवा में हूँ। यह कमाल है शिवबाबा की। लौकिक पिता ज्ञान में नहीं थे, फिर भी बाबा ने हाथ से पत्र लिखकर भेजा, 'बच्चे, तुम निश्चिंत रहो, बच्ची को नया जीवन मिल गया है।'

आज मेरे पास जो कुछ भी है या

मैं जो कुछ भी हूँ यह सब शिवबाबा की कृपा से है। मेरा जो श्वास चल रहा है, वो भी बाबा का दिया हुआ है। सब लोग आश्चर्य करते हैं, कैसे इतनी लम्बी आयु तक चल रही है। यह कमाल है शिवबाबा की, बाबा ने मुझे मरज़ीवा बनने के बाद भी दूसरा शारीरिक जन्म दिया। बाबा कहा करते थे, यह यज्ञ से गई हुई आत्मा है। उस ही आधार से हम चल रहे हैं, आगे भी बाबा ऐसे चलाते रहेंगे।

बाबा शुरू से लेकर कहते थे, यह बच्ची बड़े-बड़े साधु-संत-महात्माओं को ज्ञान देगी। उस समय मैं यह सोचती थी कि बाबा मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए, मुझे शक्तिशाली बनाने के लिए ऐसा कहते हैं, मेरे में ऐसी कोई योग्यता नहीं है परन्तु योग्यताएँ देने वाले भी बाबा हैं। ये भी बाबा के दिये हुए वरदान हैं। जो असंभव कार्य थे वे बाबा के वरदानों ने संभव करके दिखाये। हम शास्त्र भी नहीं पढ़े थे, साधु-संतों को भी नहीं जानते थे, फिर भी उनकी सेवा करेंगे, यह कैसे होगा? यह सब बाबा ने ही हमको सिखाया। बाबा का वरदान काम करता है और हम सफल हो जाते हैं।

एक बार बाबा मुरली चला रहे थे, एक माता ने आकर हंगामा शुरू कर दिया इसलिए कि उसकी बेटी कहती थी, मुझे शादी नहीं करनी है। बाबा ने मुरली बंद कर दी, शांति में बैठ गये। एक-दो भाइयों को थोड़ी उत्तेजना आई कि इस माता को निकाल बाहर करें, बाबा की मुरली के समय डिस्टर्ब कर रही है। बाबा ने उनको भी इशारे से कहा, शांत रहो। बिचारी माता के अंदर जो भरा हुआ था वो बोला और बेटी को लेकर चली गई। बाबा ने फिर वैसे ही मुरली चलाना शुरू कर दिया। उस विषय में कुछ भी नहीं बोला। जैसे वह बीच में एक साइडसीन आया और गया। कितनी भी विपरीत परिस्थिति में बाबा हमेशा शांत रहे। बाबा हर परिस्थिति में उसी प्यार से उसी शान्ति से व्यवहार करते थे। परिस्थिति आती थी, जाती थी पर बाबा अचल-अडोल रहते थे। ❖

नव वर्ष इस बार

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

नव वर्ष मना के देख, कैसा होता है नव वर्ष?
जब हो बुद्धि अर्श पे, आत्मा में हर्ष ही हर्ष।
जब हर कोई के नयन पवित्र होंगे...
लक्ष्मी-नारायण सरीखे चरित्र होंगे...

न भय होगा, न किसी भी बालिका में आह होगी,
बदलेंगी वृत्तियाँ, श्वास में सुखेली वाह होगी।
धन के पीछे न होगा जब कोई का हनन,
मनों में होगा केवल रूहानी आलाप का मनन।
बिखरेगा चहुँ ओर सद्भावों का अमृत कलश,
वही क्षण होगा सच में नव-भव्य वर्ष।
जब हो बुद्धि .....

जब कर सकेंगे बच्चे भी अहर्निश निर्भय विचरण,
न होंगी निर्मम हत्याएँ, न होंगे कोई अपहरण।
होंगे शुद्ध संस्कार, दर्शित होंगे निर्विकारी आचरण,
दिखेंगे यत्र तत्र सर्वत्र नवीन अनुपम करम।
सच में होगा सत्य सूर्योदय दीखेगा नया वर्ष,
देगा खुशी की सौगात सभी को तभी गया वर्ष।
जब हो बुद्धि .....

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान।
मो.: 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49
वेबसाइट: www.ghrc-abu.com
फैक्स: (02974) 238570
ई-मेल:drmurlidharsharma@gmail.com

प्रथम मिलन में समर्पण

● ब्रह्माकुमारी विजय, सिद्धपुर (गुजरात)

मेरा लौकिक जन्म जयपुर में एक धार्मिक कुटुंब में हुआ। लौकिक दादा जी बहुत ही भक्ति भाव वाले थे। मेरे में भी उन्होंने भक्ति करने के संस्कार डाले थे। स्कूल में जाने से पहले भगवान को माथा टेककर ही जाना होता था। सन् 1964 में दादा जी को ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय मिला और साप्ताहिक कोर्स करने के बाद नियमित ज्ञान का अभ्यास करने लगे। उन्हें नियमित बाहर जाते देख एक दिन मैंने प्रश्न किया कि आप शाम को रोज़ कहाँ जाते हैं, मुझे भी अपने साथ ले चलिए। उन्होंने कहा, मैं सत्संग में जाता हूँ, आप अभी छोटी हैं इसलिए पढ़ने में अपना मन लगाइये।

बाबा मिलन के अनुभव सुन मैं तड़प उठी

एक दिन मैं हठ करके उनके साथ चल दी। सेवाकेन्द्र पर पांव रखते ही वहां का वातावरण मन को छू गया। योग चल रहा था, लाल प्रकाश से कमरा प्रकाशित था, निमित्त बहन योग करा रही थी। मन में ऐसी भावना जागी कि यहां तो रोज़ आना चाहिए। फिर नियमित जाने लगी। थोड़ा परिचय मिला कि ये शिवबाबा हैं, ये ब्रह्माबाबा हैं और बाबा के महावाक्य सुनने लगी। कुछ महीनों बाद दादी जी तथा दादा जी मधुबन (पाण्डव भवन) में साकार बाबा से मिलने के लिए गये। वहां से आने के बाद जब उन्होंने बाबा से मिलने के अनुभव सुनाये तो मैं तड़प उठी कि मुझे भी बाबा से मिलना है। मैंने बाबा को पत्र लिखा और मन की लगन प्रगट की। बाबा ने जवाब में लिखा, बच्ची, जब चाहो तब आ सकती हो। दृढ़ संकल्प रंग लाया और सन् 1968 में स्कूल की परीक्षा देकर दादाजी के साथ मधुबन पहुँच गई।

मन ने कहा, बाबा से दूर नहीं जाना

पाण्डव भवन में शाम को बाबा से मिलना हुआ। जैसे ही बाबा को देखा, मैं बाबा की गोदी में चली गई। ऐसा लगा कि मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई है। मन यही कह रहा था कि अब बाबा से दूर नहीं जाना है। फिर बाबा ने अपने हाथों से टोली खिलाई और कहा, बच्ची, कल आपसे बाबा फिर मिलेंगे। बाबा के ये महावाक्य सुन मन खुशी से झूम उठा कि कल बाबा से व्यक्तिगत मुलाकात होगी।

सेवाकेन्द्र पर रहने का पक्का प्रोग्राम बना दिया

दूसरे दिन मैं तथा दादा जी बाबा को झोंपड़ी में मिले। जिसका इन्तजार था वो सम्मुख मिलने की घड़ी आ गई। मैं बाबा के सामने बैठी तथा दादा जी बाजू में बैठे। पहले तो बाबा ने मुझे शक्तिशाली दृष्टि दी, फिर पूछा,

बच्ची, अभी क्या कर रही हो? मैंने कहा, अभी स्कूल की परीक्षा देकर आपसे मिलने के लिए आई हूँ। बाबा ने पूछा, यहाँ से जाकर फिर क्या करोगी? मैंने कहा, बाबा, अभी तो पढ़ाई पढ़नी है। यह सुनकर बाबा गंभीर हो गये और मुझे दृष्टि देने लगे। मुझे लगा मानो मेरी तकदीर पढ़ रहे हों और कुछ ही समय के बाद बोले, बच्ची, अभी पढ़ाई नहीं पढ़नी है। यह महावाक्य सुनकर मैं भी थोड़ी गंभीर हो गई और बारी-बारी से बाबा को और दादा को देखती रही। मन में संकल्प आया कि बाबा की आज्ञा है तो मुझे उसका पालन करना ही है। फिर मैंने मन का भाव प्रकट कर दिया, बाबा, आपकी आज्ञा है तो मैं नहीं पढ़ूंगी और ईश्वरीय सेवा करूंगी। फिर बाबा ने दूसरा प्रश्न पूछा, बच्ची, शादी तो नहीं करनी है? मैंने कहा, नहीं बाबा, मैं तो आपकी ही हूँ और आपकी ही रहूँगी। मेरा उत्तर

सुनकर बाबा ने दादा जी से कहा कि मैं बच्ची को अमृतसर ट्रेनिंग में भेजूँगा, आप लौकिक घर जाना। बच्ची अब लौकिक घर से कुछ नहीं लेगी। बच्ची की पालना अब यज्ञ से होगी। तभी बाबा को दूसरा विचार आया, बोले, अच्छा, बच्ची को मैं कलकत्ता भेजता हूँ, वहाँ ट्रेनिंग लेगी। इस पर दादा ने कहा, बाबा, इनके लौकिक पिता तो अहमदाबाद में रहते हैं। आप इन्हें इतनी दूर भेजेंगे तो वे मुझसे नाराज़ हो जायेंगे। अगर आप बच्ची को अहमदाबाद भेजेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। बाबा ने कहा, हाँ, बच्ची अहमदाबाद भी जा सकती है। बाबा चिट्ठी लिखकर देता है। इस प्रकार मेरा सेवाकेन्द्र पर रहने का पक्का प्रोग्राम बाबा ने बनाया और फिर दृष्टि देकर मुझे अपनी गोद में समा लिया। मैं ज्यों ही बाबा की गोद में गई, महसूस हुआ कि बाबा ने दैहिक बन्धनों से मुझे मुक्त कर हलका कर दिया। भगवान ने स्वयं मेरी तकदीर पढ़कर मेरा भाग्य ऊँचा बना दिया। बस मेरी तो खुशी का पारावार न रहा।

बाबा की परीक्षा में पास हो गई

मेरे समान उम्र की बहुत कन्याएँ उस समय आई हुई थीं। मैंने सबको बताया कि बाबा ने मुझे सेवाकेन्द्र पर जाने की छूट्टी दे दी है। वे सभी कहने लगीं कि हम तो कब से बाबा को कह रहे हैं कि हमें सेवाकेन्द्र पर भेजो, तो भी बाबा अभी हाँ नहीं कर रहे, आप बहुत भाग्यशाली हो जो बाबा ने आपको सेवाकेन्द्र पर जाने की आज्ञा दे दी। फिर तो बाबा की मुरली सुनते, मिलन मनाते सेवाकेन्द्र पर जाने का दिन आ गया। सेवाकेन्द्र पर जाने से पहले बाबा ने सौग़ात लेने के लिए बुलाया। बाबा ने मेरे लिए तीन कश्मीरी भरत की ड्रेस रखीं और कहा, बच्ची, इनमें से दो ड्रेस पसंद कर लो। मैंने कहा, बाबा, आप तो मुझे सेवाकेन्द्र पर भेज रहे हो, अब तो मैं आपकी बच्ची पक्की ब्रह्माकुमारी बनी हूँ, आप मेरी परीक्षा ले रहे हो? अब मुझे ये रंगीन ड्रेस नहीं पहननी हैं। मुझे अपने हाथों से ब्रह्माकुमारी की ड्रेस दीजिए। तब बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा आपकी परीक्षा ले रहे थे कि अभी भी मन रंगीन कपड़ों में तो नहीं है। आप पास हो गई। बाबा ने ब्रह्माकुमारी जीवन की भी दो ड्रेस तैयार रखी थीं, मुझे अपने हाथों से वो दीं और अलौकिक जीवन का ठप्पा लगा दिया।

मेरा दृढ़ निश्चय देख माता-पिता लौट गए

अगला दिन बाबा से विदाई लेने का दिन था। बाबा को छोड़ने का दिल नहीं होता था। बाबा से गले मिलकर आँखों से अश्रुधारा बह चली। बाबा ने प्यार भरी दृष्टि देते हुए कहा, बच्ची, बाबा आपको सेवा पर भेज रहा है, आपको बाबा का नाम बाला करना है। मैं बाबा की याद और प्यार को दिल में भरकर अहमदाबाद पालड़ी

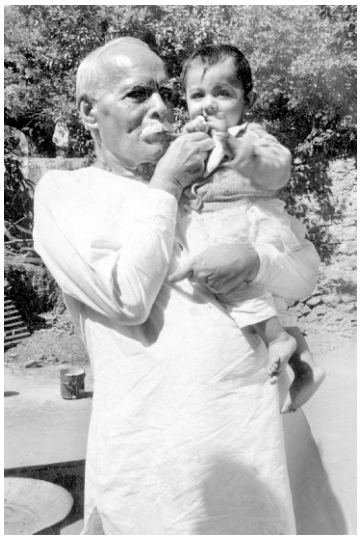

सेवाकेन्द्र पर आ पहुँची। सेवाकेन्द्र पर ऐसा लगा मानो मैं अपने घर में आ गई हूँ। माता-पिता को समाचार मिला तो वे मेरे से मिलने के लिए सेवाकेन्द्र पर आये। थोड़ी देर बातचीत करने के बाद कहा, चलो हमारे साथ घर। मैंने कहा, अब तो मैं यहां पर ही रहूंगी। दादा जी ने बताया कि बच्ची ने खुशी से ये जीवन बनाने का संकल्प किया है। माता-पिता मेरा दृढ़ निश्चय देख घर लौट गये पर कहके गये कि घर पर मिलने आते रहना।

लोगों के ताने

बाबा ने घर पर मिलने जाने की छुट्टी दे दी थी। मैं ब्रह्माकुमारी ड्रेस में ही घर पर मिलने जाती थी। आस-पास के लोग मुझे देखकर माता-पिता को कहते, आपको शादी का खर्च नहीं करना था, दहेज नहीं देना था इसलिए इसको संन्यासी बना दिया। लौकिक माता ने कहा, तुमने तो जीवन बना

लिया पर लोग मुझे ताने देते हैं, जब भी घर आओ, रंगीन कपड़े पहना करो। माताजी की ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति देख मैं कई दिन घर नहीं गई। बहुत बुलाने पर जब घर गई तो वे बोली, आप तो देवी हो, पूज्य हो। मैंने तो लोगों की बातों में आकर आपको ऐसा-वैसा कह दिया था और उनकी आंखें आंसुओं से भर आईं। बाद में हमारे घर के पास ही सेवाकेन्द्र खुला और माताजी, पिताजी, छोटी बहन भी सेवाकेन्द्र पर जाने लगे। लौकिक बहन ने भी बाबा को पहचान कर अपना जीवन सेवा में समर्पित कर दिया। पिछले 35 वर्षों से वो भी (लक्ष्मी बहन) अहमदाबाद में (अमराईवाड़ी) सेवाकेन्द्र संभाल रही हैं।

आपस में झगड़ना नहीं

सेवाकेन्द्र पर रहते हुए मुझे सेवाएँ करने का अनुभव मिलता रहा। कुछ समय बाद दूसरी बार बाबा से मिलने मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बीच भी बाबा से फोन तथा पत्रों द्वारा मिलना होता रहा। बाबा सुबह 6.15 पर क्लास में आते थे। उससे पहले हम तैयार होकर बाबा से गुडमार्निंग करने जाते थे। एक दिन सुबह गुडमार्निंग करके मैं बाबा से दृष्टि ले रही थी तो बाबा ने मुझे अपने पास बिठाया और पूछा, बच्ची, सेवाकेन्द्र पर अच्छा लगता है ना। सभी मिलजुलकर रहती हो ना? मैंने कहा, जी बाबा। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची आप जो साथ में रहती हो, कभी आपस में लड़ती-झगड़ती तो नहीं हो? मैंने कहा, नहीं बाबा, हम सभी आपस में प्यार से रहते हैं और सेवा करते हैं। बाबा ने कहा, बच्ची, कभी आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं क्योंकि बाबा के पास एक बच्ची है, बाबा उसको जिस भी सेवाकेन्द्र पर भेजता है, सभी से लड़-झगड़ कर वापिस बाबा के पास आ जाती है। बच्ची, तुम्हें मालूम है वो सतयुग में क्या बनेगी? बाबा ने कहा, वो दासियों की दासी बनेगी। बच्ची, आपको तो सेवा करके बाबा का नाम बाला करना है।

जल्दी जाओ, जल्दी आओ

उसी समय लच्छू दादी दो प्रकार की टोली लेकर के आई और बाबा से पूछने लगी, बाबा आज क्लास में कौन-सी टोली देनी है? बाबा मुझसे पूछने लगे, बच्ची, बताओ आज कौन-सी टोली दें? बाबा खुद अथॉरिटी थे पर बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाते उन्हें आगे रखते थे। मैंने इशारा कर कहा, ये टोली देंगे। बाद में हम क्लास में गये। बाबा की मुरली सुनने लगे। मैं काफी दूर बैठी थी, बाबा ने मुझे इशारे से नजदीक बुलाकर अपने सामने बिठाया और क्लास के बाद टोली बांटने की सेवा करवाई। सेवाकेन्द्र पर जाने के एक दिन पहले बाबा ने मुझे अपने साथ झूले में बिठाकर झूला झुलाया और पूछा, बच्ची, किसके साथ झूला झूल रही हो? मैंने कहा, बापदादा के साथ। इस तरह झूला झूलते, मिलन मनाते एक सप्ताह कब बीत गया मालूम नहीं चला। वापिस आते समय बाबा ने जल्दी जाओ, जल्दी आओ (Go soon, Come soon) की टोली देते हुए कहा, बच्ची, तुम्हें तो देश-विदेश में सेवा कर बाबा का नाम बाला करना है।

अव्यक्त होते भी बाबा सदा साथ हैं

मुझे यह मालूम नहीं था कि बाबा के साथ यह अन्तिम मुलाकात है। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ऐसा महसूस होने लगा कि अब मधुबन में मैं किससे मिलने जाऊँगी। मुझे बाबा जैसा सानिध्य अब किससे प्राप्त होगा? पर जब मधुबन गई तो पाण्डव भवन के दरवाजे पर पांव रखते ही देखा जैसे बाबा सामने खड़े हैं और कह रहे हैं, बच्ची आ गई। ऐसा कह कर बाबा अदृश्य हो गये। तब महसूस किया कि अव्यक्त होने के बाद भी बाबा सदा हमारे साथ हैं। फिर तो अपना हाथ और साथ देकर अनेक स्थानों पर बाबा ने सेवा करवाई। विदेशों में भी दुबई, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, अफ्रीका (नैरोबी, कम्पाला, दारूसलम) में सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बस एक ही संकल्प है कि शरीर के अंतिम श्वास तक बाबा की सेवा करती रहूँ। सेवा करते-करते ही बाबा की गोद में समा जाऊँ। बाबा का लाख-लाख शुक्रिया कि जीवन धन्य बना दिया। इसलिए दिल गाता है, ''किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ।'' ❖

बाबा ने कहा, बच्चा बहुत अच्छा है

● ब्रह्माकुमार दुर्गा प्रसाद माहेश्वरी, बी.के.कालोनी, शान्तिवन

सन् 1940 में राजस्थान के नागौर के एक छोटे-से गाँव तोसीना में इस शरीर का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ। माता-पिता बहुत भक्ति भावना वाले तथा दान-पुण्य करने वाले थे। थोड़ी समझ आने की उम्र हुई तो सांसारिक पढ़ाई में रुचि न होने के कारण 5वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी। पूजा-पाठ करना, सत्संग में जाना, 24 घंटे एक जगह बैठकर सम्पूर्ण रामायण का पाठ करना, यह सब चालू हो गया। ऐसा आभास अन्दर होता था कि इस जन्म में भगवान ज़रूर मिलेंगे। गीता में पढ़ता था, भगवानुवाच है, 'मैं साधारण तन में प्रवेश होकर आता हूँ पर मूढ़मति लोग मुझे नहीं पहचान पाते।' आरती में सुनता था, 'बूढ़ा ब्राह्मण बनकर हरि ने दर्शन दियो।' मेरे मन में हमेशा विचार चलता था कि इतने साधारण हरि को तू पहचानेगा कैसे, पहचानने की खूब होशियारी रखना। दिन निकलते गए, उम्र के 18वें साल में शादी हो गई।

भगवान सच्ची गीता सुना रहे हैं

सन् 1960 में कोलकाता में नौकरी करने गया। लौकिक गाँव में आना-जाना होता रहता था। सन् 1966 में एक दिन कोलकाता में प्रात: 5 बजे कमरे में बैठा गीता-पाठ कर रहा था, इतने में मेरे सामने की गद्दी पर काम करने वाले एक सज्जन पुरुष पीछे खड़े होकर पूछने लगे, आप क्या कर रहे हैं? मैंने कहा, गीता पढ़ रहा हूँ। उन्होंने कहा, यह तो भक्तिमार्ग की गीता है, अब तो भगवान स्वयं अवतरित होकर ब्रह्मा के वृद्ध तन द्वारा सच्ची गीता सुना रहे हैं, आप मेरे साथ चलो, आप को दिखा दूँ, कहाँ, कैसे ज्ञान सुनाते हैं। सुनते ही मुझे बात जँच गई और उनके साथ चल दिया। उन्होंने मुझे सेवाकेन्द्र ले जाकर मुरली क्लास में बिठा दिया। मुरली के मधुर महावाक्य सुनते ही बुद्धि ने निर्णय किया कि यही सत्य ज्ञान है। पीछे से एक बहनजी ने आकर कहा, आप इधर आइये, आप नये हैं, सात दिन का कोर्स होगा फिर क्लास में बैठना। मुझे वहाँ से उठना अच्छा नहीं लगा। एक-एक ज्ञान-रत्न बुद्धि में फिट हो रहे थे। मेरी मन:स्थिति को जानकर आदरणीया दादी निर्मलशान्ता जी ने कहा, इसको क्लास करने दो, बाद में कोर्स कराना। मैंने दादीजी को कहा, क्लास पूरी होने पर सबसे ज्यादा ज्ञान-बिंदु सुना दूँगा। इस प्रकार मुझे जीवन भर की भक्ति का फल मिलने लगा। खुशी का पारावार नहीं रहा। रोज़ाना प्रात:क्लास में समय पर पहुँचने वाला पहला ईश्वरीय विद्यार्थी हो गया।

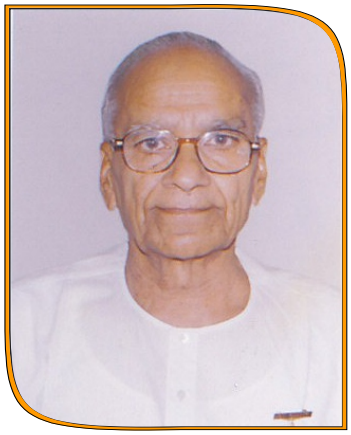

बापदादा से मिलने की तड़प

दादी निर्मल शान्ता, संदेशी दादी, कुन्ज दादी माँ की तरह पालना देने लगे। विशेष योग-दृष्टि से शक्ति भरते गए। दादियों के मुख से 14 साल की भट्ठी के अनुभव, बापदादा के साथ के अनुभव, उनकी पालना और तपस्या के अनुभव सुन-सुन कर आँखों से अश्रु बहते थे, सोचता था, ऐसे प्राणेश्वर बापदादा की गोद में कब बैठूँगा, जन्म-जन्म की मिलन की प्यासी आत्मा की प्यास कब बुझेगी? हर रोज़ अनुभव सुनते-सुनते ऐसा उमंग आया, अभी मिलूँ, साथ खेलूँ, गोद में बैठूँ, बापदादा के साथ झूला झूलूँ। दादी यह भी सुनाती थी कि बाबा किसी बच्चे को चाँदी की अंगूठी पहनाते, किसी को सोने की पहनाते, किसी के साथ फोटो भी खिंचवाते, बैडमिंटन भी खेलते, मेरा उमंग और बढ़ जाता। अभी दो मास ही बीते थे

क्लास करते, मैंने दादीजी को कहा, बापदादा से मिलने भेजो। दादीजी ने कहा, एक साल धारणा में चलने के बाद भेजेंगे। मैंने कहा, इस मिलन के विरह में कहीं शरीर छूट गया तो बिना मिले ही चला जाऊँगा संसार से, एक साल तक जिंदा रहूँगा, पहले आप यह गारन्टी ले लो। दादीजी ने कहा, यह गारन्टी तो कोई नहीं ले सकता। मैंने पुन: अनुरोध किया कि आप भेजें तो ठीक होगा नहीं तो मेरा लौकिक परिवार तो राजस्थान में ही है। वहाँ जाने के बहाने पहुँच जाऊँगा बापदादा के पास। रहमदिल दादीजी ने मेरी इतनी तड़पन को देखकर कहा, दूसरे साथी भाइयों को भी तैयार करके साथ में भेजती हूँ। चार दिन बाद दो व्यापारी भाई तैयार हुए। कायदे सिर भारती बहनजी (अभी राजकोट में सेवारत) लेकर आई। अब तो खुशी का कहना ही क्या था। चला एक भक्त भक्ति का फल पाने। तीन बातें मन में लेकर चला था, 1. बाबा गोद में बैठाकर सोने की अँगूठी पहनायें, 2. मेरे अकेले के साथ बैडमिंटन खेलें, 3. बापदादा के साथ फोटो भी खिंचनी चाहिये। ये तीनों बातें पूरी होने पर ही 100 परसेंट निश्चय होगा, कैसा बचपना था!

सब आशाएँ पूरी हुईं

सवेरे मधुबन पहुँचे। फिर तैयार हुए। पता चला कि शाम को पाँच बजे बापदादा मिलेंगे। दिनभर के इन्तजार के बाद आखिर वो घड़ी आई। वे दोनों भाई उम्र में बड़े थे, पहले वे मिले। एक भाई मिलकर आया, मेरी नज़र अँगूठी पर गई, चाँदी की थी। दूसरा भाई आया, फिर मेरी नज़र अँगूठी पर गई। उसकी भी चाँदी की थी। अब इस आत्मा का नम्बर आया। कैसा अद्भुत मिलन, कैसा प्यार, कैसी रूहानियत, जन्म-जन्म की अधूरी आस पूरी होने की शुभ वेला थी। बड़े प्यार से बापदादा ने गोद में बैठाया। बाबा की गोद में भार कम देकर मैंने अपने पैरों पर भार रखा। बाबा ने कहा, बच्चे, प्यार से बैठो, बाप की गोद है। खूब आराम से बैठाया। फिर सामने नज़र डाली तो चाँदी की अँगूठी का डिब्बा पड़ा था। जानीजाननहार बाबा ने सामने खड़ी लच्छू दादी से कहा, कलकत्ते का बच्चा है, बहुत अच्छा बच्चा है, इसके लिए सोने की अँगूठी का डिब्बा लाओ। फिर बड़े प्यार से अँगुली में अँगूठी पहनाई। इधर प्यार समा नहीं पाया तो मोती बनकर मेरी आँखों से बरसने लगा। जिसको दुनिया ने अनपढ़, गरीब जानकर ठुकराया, उसी आत्मा को आज गरीब नवाज़ बाप ऐसा सम्मानित कर रहे हैं। भक्तों ने ठीक ही कहा है, प्रभु तेरी लीला अपरंपार है। कितनी बड़ी इच्छा पूरी हुई मेरी।

दूसरे दिन शाम को फ्रेश होकर

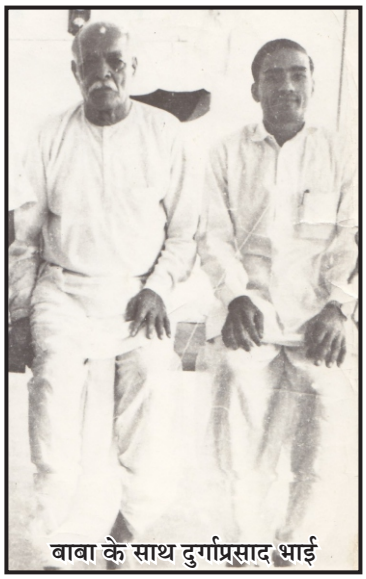

बाबा के साथ दुर्गाप्रसाद भाई

बाहर निकले, तो बाबा भी अपने कमरे से निकले। बैडमिंटन का सामान साथ में था। बाबा ने कहा, आओ बच्चे खेलते हैं। मैंने सोचा, मैं जवान बच्चा हूँ, मैं जीतूँगा पर हार रहा था। खेलते-खेलते बाबा ने पूछा, बच्चे, किसके साथ खेल रहे हो? मैंने कहा, बापदादा के साथ। फिर बाबा ने पूछा, जो बापदादा के साथ खेलता है वो भविष्य में किसके साथ खेलेगा? फिर मुसकराते हुए बाबा ने ही कहा, वो भविष्य में श्रीकृष्ण के साथ खेलेगा, ये संस्कार यहीं बन रहे हैं। तीसरे दिन 11 बजे बाबा झूले के पास ले गये। वहीं चंद्रहास दादा ने फोटो निकाला। बाद में मुझे वह फोटो कोलकाता भेजी गई।

कर्मों की कुशलता

क्लास के बाद हर रोज़ फलों की टोली बाबा मेरे द्वारा बँटवाते। एक दिन

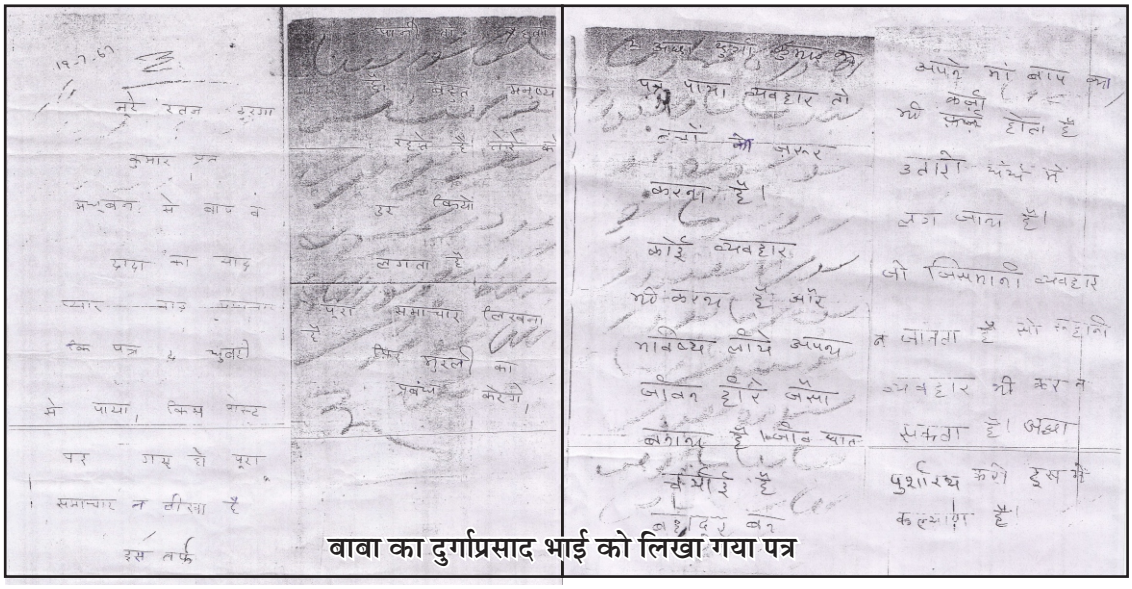

बाबा का दुर्गाप्रसाद भाई को लिखा गया पत्र

बर्तन में अंगूर थे। बाबा ने कहा, बच्चे 5-5 अंगूर सबको दे दो। मैं गिन-गिनकर देने लगा। गिनने में देर लग रही थी। बाबा उठकर मेरे पास आए। बर्तन में से नेचुरल मुट्ठी भरी तो मुट्ठी में पाँच अंगूर ही थे। फिर उठाये, पाँच ही आए। कई बार ऐसी जादूगरी दिखाई, इस प्रकार बाबा ने कर्मों की कुशलता सिखाई। एक दिन रोटी सेकने की बारी आयी। कभी एक साथ इतनी रोटियाँ सेकी नहीं थी। बाबा आये, पलटा लिया और फिर फटाफट उलट-पलट कर सेकने लगे। बाबा बोले, बच्चे, ऐसे सेकनी चाहिएँ, नीचे आँच तेज़ है, नहीं तो रोटी जल जायेगी। इस प्रकार खुद कर्म करके सिखाया। सात दिन रहने के बाद बाबा ने पूछा, बच्चे, तुमने बॉम्बे देखी कि नहीं? मैंने कहा, नहीं देखी बाबा। फिर कहा, बॉम्बे देखकर आओ, बाबा पत्र लिखकर देता है, शाम की ट्रेन में जाना है। दादी प्रकाशमणि के नाम पर पत्र दिया। बाबा ने ईशु दादी से पूछा, बच्चे ने यज्ञ के लिए क्या दिया? दादी ने बताया। बाबा ने कहा, बच्चे की आधी खर्ची वापिस दे दो। फिर बाबा ने सारी बात पूछी कि पगार कितनी मिलती है? मैंने बताया, मात्र 250/- मिलता है, इसी में भोजन व्यवस्था करनी होती है। फिर बाबा गेट के बाहर तक छोड़ने आए। मेरा दिल बाबा को छोड़ने को नहीं कर रहा था। चार बार वापिस लौटा। बाबा ने कहा, बच्चे ट्रेन निकल जाएगी। उस समय पैदल बस स्टैंड जाना होता था। फिर तो जाना ही पड़ा।

सम्मान पाकर गद्‌गद् हो गया

सात दिन बॉम्बे गामदेवी सेंटर पर रहा। वहाँ लौकिक सम्बन्धियों को बाबा का सेवाकेंद्र दिखाया। एक जान-पहचान के मिल मालिक के घर कार्यक्रम कराया। सारे सेन्टरों से ब्रह्माभोजन का निमंत्रण मिला। बाबा के हाथ का पत्र और निर्मल शान्ता दादी का स्टूडेन्ट – इस प्रकार का सम्मान पाकर गद्‌गद् हो गया। वापस मधुबन लौटकर सारा समाचार बाबा को सुनाया, 4 दिन मधुबन में रहकर फिर कोलकाता गया। इसके बाद लौकिक परिवार वालों का खूब-खूब विरोध झेलना पड़ा पर बाबा ने जीवन नइया को संभाला। मुझे खुशी है कि 6 पुत्रों और एक पुत्री की पालना के निमित्त ड्रामा और बाबा ने बनाया। उनमें से दो पूर्ण समर्पित हैं और 5 लौकिक-अलौकिक सेवाओं में सन्तुलन रख कुमार जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पिछले 12 वर्षों से शान्तिवन के साथ बी.के.कालोनी में रह रहे हैं। ❖

सत्य बाबा के सत्य बोल

● ब्रह्माकुमार चन्दूलाल, फिरोजपुर कैंट

दो जनवरी, 1965 को मैं पहली बार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आया। मेरी आयु लगभग 22 वर्ष थी, बिजली बोर्ड में कैशियर के रूप में सेवा करता था और मैं तम्बाकू वाले पान बहुत खाता था, बीस पान भी एक दिन में खा जाता था। एक दिन पान खाकर नशे में दुकान पर खड़ा था। मेरे दोस्त धर्मवीर भाई ने मुझे देखा तो बोले, फिरोजपुर छावनी में एक आश्रम खुला है, वहाँ मैंने ज्ञान सीखा है, बहुत अच्छा ज्ञान देते हैं, तुम भी चलना। हम दोनों हरेक धार्मिक कार्य में इकट्ठे जाते थे।

स्वभाव मीठा हो गया

इस घटना के सप्ताह बाद मैं सेवाकेन्द्र पर अकेला ही चला गया। वहाँ मुझे ब्रह्माकुमारी निर्मला बहन मिली। उन्होंने मुझे आत्मा, परमात्मा की सही पहचान दी। पहले मैं समझता था कि आत्मा ही परमात्मा है पर अब मुझे अनुभव हुआ कि आत्मा अलग है और परमात्मा अलग है और यही सत्य ज्ञान है, यह विश्वास हो गया। इसके बाद ज्ञान सुनते गए, उस पर मनन करते गए। इससे स्वभाव मीठा हो गया। व्यवहार में नम्रता आ गई। यह निश्चय हो गया कि परमात्मा प्यार का सागर है तो मुझे भी प्यार से भरपूर बनना है। कैशियर की पोस्ट पर अनेक लोगों से सुखदाई व्यवहार करने का सलीका आ गया परन्तु पान खाना नहीं छूटा। यह आदत मधुबन जाने पर ही छूट पाई।

दो बार मिली गोद

उसी साल जुलाई में बाबा से मिलने मधुबन आना हुआ। प्यारे बाबा से मिलन हुआ। बाबा की गोद भी ली, गोद का अनुभव बड़ा निराला रहा। गोद में बैठकर मैं सुध-बुध भूल गया। बाबा का शरीर बिल्कुल रूई की तरह कोमल महसूस हुआ। मैं बिल्कुल हल्का हो गया। गोद में लेने के बाद बाबा बच्चों को सौगात देते थे। मुझे भी दी पर मेरी वहीं छूट गई। फिर बाबा ने पता कराया कि यह किसकी छूट गई है। मैं तो कमरे में चला गया था। बाबा को बताया गया तो मुझे बुलाया गया। बाबा ने कहा, बच्चे, आपकी चीज़ रह गई है। फिर बाबा ने मुझे पुन: गोद दी और सौगात भी पुन: हाथ में पकड़ाई। इस प्रकार मुझे दो बार बाबा से मिलने का सौभाग्य मिला। मधुबन में मैंने देखा, बरसात के दिनों में मच्छर हो जाने के कारण रात को दस बजे बाबा कई बहन-भाइयों के साथ हर कमरे में चक्कर लगाते थे, धूप का धुआँ हर कमरे में कराते थे ताकि बच्चों को मच्छर ना काटें। कितना बाबा ध्यान

रखते थे एक-एक बच्चे का!

सप्ताह भर रहने के बाद हम वापस लौटने लगे। बाबा सबके मुख में मिश्री-इलायची अपने हाथ से डालते थे। मेरी बारी आई तो बाबा ने पूछा, बच्चे जा रहे हो? मैंने कहा, बाबा, जाने का मन तो नहीं करता पर जाने का समय आया है तो जाना ही पड़ेगा। बाबा ने बड़ी दीदी से कहा, दीदी, बच्चा जाना नहीं चाहता, आप क्यों भेज रहे हैं? फिर पूछा, सामान कहाँ है? मैंने कहा, बाबा बैलगाड़ी में रखा है। बाबा ने बैलगाड़ी के पास जाकर सामान उतरवाया। इस प्रकार, मुझे मधुबन में तीन सप्ताह और रुकने का सुअवसर देकर बाबा ने मेरी इच्छा पूरी की। मधुबन में मैंने इन दिनों में पहरा देने की सेवा की। बाबा के साथ झूला भी झूला, बैडमिंटन खेला और बाबा के हाथ से गिट्टी भी खाई। मुझे स्थूल-सूक्ष्म दोनों प्रकार की सेवा का

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

बाबा ने कहा, बच्ची का चेहरा बहुत सेवा करेगा

● ब्रह्माकुमारी सुशीला, अलवर

संगमयुग की बीती हुई घड़ियों को सामने लाती हूँ तो स्मृति की सूई बार-बार घूम जाती है साकार मिलन के उन सुनहरे पलों में और सामने आ जाती है आदि पिता की वो मनमोहक सुखदायी वरदानी छवि जिसने इस आत्मा के भावी जीवन की इबारत सोने की स्याही से लिख दी।

छोटी आयु में मिला बड़ा वरदान

आज से 45 वर्ष पूर्व यह आत्मा इस कल्प में पहली बार प्यारे साकार बापदादा से मिलने लौकिक पिताजी के साथ जयपुर से आबू पहुँची। शरीर की उम्र थी 15 साल। वर्ष 1968 की गर्मियों के दिन थे। साकार बाबा सम्पूर्णता के समीप थे। सम्मुख मुलाकात में मुझे मीठी दृष्टि देते हुए बाबा ने ये वरदानी महावाक्य उच्चारे, ''इस बच्ची का चेहरा बहुत सेवा करेगा। वाणी से ज्यादा चेहरे से आत्माएं बाप की ओर आकर्षित होंगी।'' उस समय मुझे ज्ञान की समझ नहीं थी इसलिए इस वरदान का अर्थ नहीं जान पाई। आज मुझे आश्चर्य लगता है कि मेरी उस छोटी आयु में इतना बड़ा वरदान और वो भी पहली मुलाकात में बापदादा ने दे दिया! इस अमूल्य वरदान ने सेवाओं के क्षेत्र में मुझे बहुत मदद की। चेहरे पर रूहानियत और प्रसन्नता की झलक स्वत: कार्य करती रही। कठिन परिस्थितियों में भी बिना मेहनत और मुश्किल के यह वरदान साथ देता रहा। इससे संतुष्ट और निश्चिंत रहने की कला सहज आ गई। सहनशीलता और शीतलता जीवन की विशेषता बन गई। बाद में, अव्यक्त बापदादा से भी बहुत वरदान मिलते रहे। वरदानों से आगे बढ़ने का रास्ता मिलता रहा।

सर्व प्रति एक नजर

अगली सुबह मुरली क्लास में मैं आगे की पंक्ति में बाबा के सामने बैठी थी। बाबा ने बोला, ''देखो, यह बच्ची सदैव हर्षित रहती है। इसके चेहरे पर कोई गम की रेखा नहीं है, जैसे देवतायें।'' मैं तो नहीं समझ रही थी लेकिन पास वाली माता ने इशारे से कहा, ''देखो, बाबा आपको देख कह रहे हैं। आप बाबा की दृष्टि लो।'' हम मधुबन में आठ दिन रहे। साकार बाबा का उठना, बैठना, देखना, चलना, बच्चों से मिलना, टोली देना – सब मन को बहुत भाता था। मुझे बाबा की जिस बात ने सर्वाधिक आकर्षित किया वह थी समदृष्टि। भक्ति की एक पंक्ति जो हमें बहुत अच्छी लगती थी, 'समदर्शी प्रभु नाम तिहारा' अर्थात् भगवान की दो नज़र नहीं, सर्व के प्रति एक नज़र होती है, बाबा इसका साकार स्वरूप थे। इसका भी कल्याण हो जाये, यह आत्मा भी कुछ

प्राप्त कर ले, हर बच्चे के प्रति यह भावना हमने ब्रह्मा बाबा के जीवन में देखी। बाबा के सामने चाहे बड़ा अधिकारी आये, व्यापारी आये या गाँव की भोली अनपढ़ माता, बाबा की वही स्नेहमयी दृष्टि, वही ममतामयी गोद, वही वरदानी बोल होते थे। इस चीज़ ने मेरे दिल को छू लिया और लगा कि भगवान हैं तो यही हैं।

बच्ची मेरे पास ही आएगी

विदाई के समय मैं बाबा की गोद में गई तो प्यार के सागर बाबा ने अपना सम्पूर्ण प्यार मुझ पर उंडेल दिया। मन में आया, ''इतना प्यार करेगा कौन....', ऐसी अद्भुत कमाल थी बाबा की अलौकिक गोद की, निर्मल नि:स्वार्थ स्नेह की कि उसके बाद किसी भी देहधारी की तरफ मुझे कोई आकर्षण नहीं हुआ। माया, लगाव या टकराव के रूप में कभी वार नहीं कर सकी। जब हम मधुबन से वापस लौटे

तो सभी को यह स्पष्ट पता चलने लगा कि दुनिया से बेखबर मेरे भोले बाल-चित्र में उस रूहानी रंगरेज ने चुपके से क्या रंग भर दिया! मैंने स्वयं भी अपने-आपको कुछ अलग, कुछ बहुत अच्छा महसूस किया। मेरे नन्हें कदम अनजाने ही उस रास्ते की तरफ तीव्रगति से बढ़ते गये जहाँ प्रभु-समर्पण का महान भाग्य मेरे इंतज़ार में था। मेरी इस लगन को देखकर लौकिक पिताजी अपार खुशी का अनुभव करते थे। मेरे लिए उनका सदा यही शुभ संकल्प रहता था कि यह बच्ची बाबा की सेवा में लगे। मधुबन जाने से पहले न मैं मुरली में रुचि लेती थी, न सेन्टर पर जाती थी। तब लौकिक पिताजी ने एक बार साकार बाबा से मेरे बारे में पूछा था, ''बाबा, इस बच्ची का मुझे क्या करना है?'' बाबा ने जवाब दिया था, ''बच्चे, तुम निश्चिंत रहो, यह बच्ची मेरी है और मेरे पास ही आयेगी।''

बाबा की सम्पूर्णता, मेरा समर्पण

लौकिक-अलौकिक दोनों पिताओं का मेरे लिए संकल्प बहुत जल्दी पूरा हुआ और मैं एक दिन जयपुर सेवाकेन्द्र पर स्थायी रूप से रहने के लिए आ गई। अनायास ही उस दिन वह घटना घटित हो गई जिसने मेरे समर्पण-दिवस को संगमयुगी इतिहास की यादगार तिथि बना दिया। साकार बाबा का अव्यक्ति दिवस मेरा समर्पण दिवस बन गया। तारीख 18 जनवरी, 1969 की सुबह मैं सेन्टर पर रहने के लिये आई और रात्रि में बाबा अव्यक्त हो गये। सुबह जब पता चला तो दिल में एक धक्का-सा लगा, नयन भर आये, ''बाबा, मैं आई और आप चले गये!'' तुरंत बाबा ने अनुभव कराया, ''बच्ची, मैं कहीं गया नहीं हूँ, मैं तो तेरे साथ हूँ। जब भी मुझे याद करोगी, अपने पास पाओगी।'' मुझे सदा यह अनुभव बना रहा। अव्यक्त से साकार की भासना आती रही। मेरी उम्र छोटी थी, सरल स्वभाव था, दुनियावी बातों का ज्ञान नहीं था तो हर बात में बाबा मदद करता था।

कदम-दर-कदम बाबा का साथ

एक बार मैं गलत ट्रेन में बैठ गई। धीरे-से जैसे कान में बाबा ने कहा, ''बच्ची ठीक ट्रेन में नहीं बैठी हो, पास वाले से पूछो।'' मैंने पूछा तो सचमुच ट्रेन दूसरी जगह जा रही थी। फिर कान में आवाज आई, ''तुरंत उतरो।'' मैं जल्दी से उठी, ट्रेन से पाँव नीचे रखा और ट्रेन चल पड़ी। उस समय मेरी उम्र करीब 16 वर्ष थी और साथ में कोई नहीं था। ऐसे कदम-दर-कदम साथ देता रहा बाबा। ऐसे ही एक बार मुझे उदयपुर सेवा हेतु पहुँचने के लिए रास्ते में दूसरी बस बदलनी थी। पहली बस से मैं उतर गई लेकिन दूसरी बस किस तरफ से कब मिलेगी, कुछ पता नहीं था। मैं मन-ही-मन बाबा से बातें कर ही थी कि बाबा मैं तो जानती नहीं, आप ही बताओ कैसे जाना है? बाबा की आवाज आई, ''बच्ची, यहीं खड़ी रहो।'' कुछ ही देर बाद एक वृद्ध व्यक्ति वहाँ आया और मुझसे पूछा, ''बेटा, आपको उदयपुर जाना है?'' मेरे 'हाँ' कहने पर उसने इशारे से बताया, ''वहाँ आपकी बस है।'' उसने मेरी अटैची उठाई और बस में रखवाकर ड्राइवर को बोला, ''इस बहनजी को उदयपुर जाना है, वहाँ उतार देना।'' ऐसे-ऐसे विचित्र अनुभव अव्यक्त में व्यक्त के होते रहे।

सब कुछ बाबा ने सिखाया

एक बात जो मुझे सदा महसूस होती है कि ओ प्यारे प्रभु! आपने मेरा भाग्य कितना श्रेष्ठ लिखा है!! जो मन-चित्त भी नहीं था, वह इस जीवन में देखा और पाया। लौकिक दृष्टि से इतना कुछ आता नहीं था, न इतनी पढ़ाई की थी लेकिन बाबा ने सब सिखाया, सब कराया। जो कुछ भी बनाया, बाबा ने बनाया। कभी भी कोई विघ्न, तनाव क्या होता, संघर्ष क्या होता, मैं नहीं जानती, ऐसा जीवन बाबा ने मेरा चलाया। बाबा की ऐसी सकाश है कि जिनके लिए बाबा ने निमित्त बनाया, वे सभी सेवास्थान और सेवासाथी भी निर्विघ्न हैं, बहुत स्नेह और उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं। हर दिन दिल से निकलता है,

तूने इतना प्यार से संभाला है,
हर कदम ममता से पाला है,
पाकर ओ बाबा तुम्हें लगता है!
किस्मत ने हम पर सब लुटा डाला है!!

अन्तिम जन्म में बिना भक्ति किए मिल गए भगवान

● ब्रह्माकुमार रामनिवास, शान्तिवन

मैं मूल रूप से श्रीगंगानगर का रहने वाला हूँ। लौकिक पढ़ाई में बी.ए.एल.एल.बी.जयपुर से करने के बाद सन् 1962 में श्रीगंगानगर में वकालत शुरू कर दी। सन् 1965 में वकालत छोड़कर मैं कोलकाता चला गया। वहाँ एशिया की सबसे बड़ी प्लास्टिक फैक्टरी में सेल्स मैनेजर रहा। मुझे कोलकाता का वातावरण अनुकूल नहीं लगा और राजस्थान लौटने की सोचने लगा। उसी समय एक दिन बाजार में घूमते समय एक धर्मशाला में एक आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगी हुई देखी।

मैं प्रदर्शनी देखने लगा। समझने वालों की काफी भीड़ थी इसलिए बहन जल्दी-जल्दी समझा रही थी। मैंने बीच में रोककर प्रश्न पूछने चाहे तो उसने कहा, यहाँ विस्तार से नहीं समझाया जा सकता, आप सेवाकेन्द्र पर आकर सात दिन का कोर्स करना। मुझे प्रदर्शनी के सब चित्र बहुत अच्छे लगे। इसके बाद मैंने साहित्य के स्टाल पर रखी सब प्रकार की पुस्तकें खरीद ली, जो लगभग 25 प्रकार की थीं। सेवाकेन्द्र का पता भी ले लिया। घर आकर मैंने और मेरी युगल (सीता माता) ने सारी पुस्तकें अध्ययन की और बहुत अच्छी भी लगीं। फिर सेवाकेन्द्र पर कोर्स के लिए गया।

बाबा ने दिया पत्र का उत्तर

कोर्स पूरा होने पर निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा, आप बाबा को पत्र लिखो। मुझे ज्ञान तो अच्छा लगा था, बहनों का जीवन भी अच्छा लगा था, सेन्टर का वातावरण भी अच्छा लगा था पर परमात्म प्राप्ति की कोई इच्छा मेरे मन में नहीं थी। मैंने इस जीवन में भक्ति नहीं की थी, घर के सब लोग भक्ति करते थे और मुझे नास्तिक समझते थे। कोर्स के दौरान मैंने बाबा को पहचाना भी नहीं था इसलिए केवल बहनजी के कहने मात्र से यूँही पत्र लिख दिया। पत्र में लिखा, बाबा, मैंने कोर्स कर लिया है, मेरी युगल और चार बच्चे हैं, बच्चों की उम्र 9 वर्ष, 6 वर्ष, 3 वर्ष, और 6 मास है। पत्र बहन को देकर मैं नए व्यापार की सेटिंग के लिए श्रीगंगानगर आ गया। बीकानेर में सब सेटिंग करके वापस कोलकाता पहुँचा और आश्रम गया। आश्रम पर पहुँचते ही बहनजी ने कहा, आपके पत्र का जवाब बाबा ने भेजा है। बाबा ने लिखा था, तुम अपने पुंगरे, पुंगरियों को लेकर मधुबन आ जाओ। बहनजी ने कहा, एक साल धारणा के नियम को पूरा करके ही कोई मधुबन जा सकता है पर बाबा ने स्वीकृति दे दी है तो हम भी आपको नहीं रोक सकते, आप कभी भी बाबा

से मिलने जा सकते हैं।

इसके बाद सप्ताह भर क्लास की और परिवार सहित राजस्थान में बीकानेर आ गए। उस समय पूरे राजस्थान में जयपुर में ही दो सेवाकेन्द्र थे। कोलकाता सेवाकेन्द्र से पत्र-व्यवहार चलता रहता था, बहनें राज़ी-खुशी पूछती रहती थीं। विशेष ज्ञान की गहराई न होते हुए भी मेरी स्वाभाविक स्थिति ऐसी हो गई थी कि रात को 2-3 घन्टे की नींद मात्र से मैं पूरा तरोताज़ा हो जाता था और दो बजे से बाबा की आध्यात्मिक पुस्तकें या थोड़ी बहुत मुरलियाँ जो थीं, उन्हें पढ़ता रहता था। कुछ समय बाद कोलकाता से पत्र आया, हम अगस्त मास में आबू जा रहे हैं, आपको चलना हो तो रास्ते में मारवाड़ जंक्शन पर मिलना। मैंने परिवार से पूछा, सभी तैयार हो गये। इस प्रकार मधुबन पहुँच गए। बाबा ने परिवार के हम छः सदस्यों को एक ही कमरे में रखा। यज्ञ की शान्ति माता को बच्चों को बहलाने की सेवा सौंप दी गई।

बाबा ने भेजे बनियानों के डिब्बे

सीता माता

मधुबन पहुँचते ही बच्चों ने और युगल ने कहा, चलो घूमने। उस समय तो हर बात की आज्ञा बहनों से लेनी होती थी। मैंने बहाना बनाकर बहनजी से कहा, मुझे बच्चों के लिए बनियानें खरीदनी हैं, बाज़ार जाना चाहता हूँ। बहनजी ने कहा, ठहरो, बाबा से पूछकर आती हूँ। बाबा ने कहा, बाबा के पास सब साइज की बनियानें हैं, जैसी चाहिएँ ले लें और हमारे पास बनियानों के अलग-अलग साइज के डिब्बे आ गए। हमने उनमें से 3,4 बनियानें मजबूरी में रख लीं, बाज़ार जाने का बहाना तो चल नहीं सका था।

बच्ची को बाबा ने दिया नाम

इसके बाद सीता माता को बाबा का खाना बनाने तथा बाबा के साथ रहने की सेवा मिली। छः मास की पदमा (ब्रह्माकुमारी पदमाबहन, कोलकाता) सब दादियों से घुल-मिल गई। जब बाबा से मिले तो बाबा ने चारों बच्चों सहित हम दोनों को गोद में लिया। उस समय तक हमने पदमा का नाम नहीं रखा था इसलिए बाबा को नाम रखने के लिए कहा। बाबा ने कहा, इसका नाम रखो पदमा, यह बच्ची पदमापदम भाग्यशाली है, यही आपको ज्ञान में लाने के निमित्त बनी है, यह यज्ञ की गई हुई आत्मा है।

बाबा की गुप्त मदद

एक बार हम परिवार सहित म्यूज़ियम के उद्घाटन अवसर पर आबू पहुँचे। बड़ी दीदी ने हमको पूछा, आपको वापस कब लौटना है। युगल ने कहा, बीकानेर में सेन्टर तो है नहीं, जाकर क्या करेंगे, हम यहीं रहेंगे। तब बड़ी दीदी ने कहा, आप मकान देखो, बहन हम भेज देंगे। हम वापस आए और आते ही बाबा ने साक्षात्कार में मकान दिखाया, हमने वो ले लिया। मधुबन में सूचना दे दी। इसी बीच मैं व्यापारार्थ पंजाब चला गया। पीछे से दीदी ने बहनों को भेज दिया और बीकानेर टेलिग्राम देना नहीं हुआ कि बहनों को स्टेशन से रिसीव कर लो। उसी रात सीता माता को आवाज़ आई जैसे कोई टेलिग्राम लेने के लिए बुला रहा हो। वे उठी, देखा, पर कोई नहीं था। ऐसा दो-तीन बार हुआ। फिर सुबह हुई, सीता माता को प्रेरणा आई और एक भाई को साथ लेकर स्टेशन तक वे यूँ ही घूमने चले गये। उसी समय ट्रेन आई, बहनें उतरी और सीता माता उन्हें साथ लेकर सेन्टर पर आ गई। इस प्रकार बाबा ने टेलिग्राम न मिलने की कमी की पूर्ति कर दी। बहनें बिना तकलीफ के सेवाकेन्द्र पहुँच गईं। ❖

सत्य बाबा के...पृष्ठ 30 का शेष

बहुत शौक था। बाबा ने मेरा नाम ही सेवाधारी बच्चा रख दिया था। उन दिनों किसी भी सेवाकेन्द्र पर सेवा हो, मैं पहुँच जाता था।

एक बार सन् 1984 में मैं बैंक से रुपये लेकर कार्यालय की ओर आ रहा था तो रास्ते में मुँह ढके हुए कुछ उग्रवादियों ने मुझे और मेरे साथी को रोक लिया और रुपयों का बैग छीन लिया जिसको छुड़ाने के लिए हाथापाई होने लगी। उन्होंने पिस्तौल मेरे सीने पर रखकर कहा, बैग छोड़ दो, नहीं तो गोली मार देंगे। फिर मैंने बैग छोड़ दिया और वे उसे लेकर भाग गए। इस घटना के बारे में मैंने अव्यक्त बापदादा को पर्सनल मुलाकात के समय बताया। मैंने कहा, बाबा वे तो गोली मारने को तैयार हो गए थे। बाबा ने कहा, ऐसे ही गोली मार देते, बाप नहीं बैठा है। यह सुनकर मेरी आँखें भर आईं। बाबा का कितना स्नेह है बच्चों से! फिर मैंने कहा, बाबा, केस चल रहा है, लुटी हुई रकम मेरे खाते में डाल रखी है। बाबा ने कहा, बच्चे, कुछ नहीं होगा, बाबा बैठा है। सचमुच, वापस जाने पर पता चला कि पुलिस ने लिखकर दे दिया है, छीनने वाले मिल नहीं रहे हैं इसलिए केस खत्म किया जाए। प्यारे बाबा का कहना सत्य साबित हुआ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.दिल्ली (किंग्जवे कैम्प)- संत निरंकारी मिशन प्रमुख बाबा हरदेव सिंह महाराज को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु.साधना बहन, ब्र.कु.नीलम एवं अन्य समूह चित्र में। **2.कडेगांव (सांगली)-** महाराष्ट्र के वनमंत्री भ्राता पतंगराव कदम को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.मीना बहन। **3.सोनेपुर-** आध्यात्मिक झांकी का उद्घाटन करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं उड़ीसा के उद्योगमन्त्री भ्राता निरंजन पुजारी, ब्र.कु.स्नेहा बहन तथा अन्य। **4.भाभा नगर-** हिमाचल प्रदेश के मुख्य संसदीय सचिव भ्राता नंदलाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन। **5.सांगली-** केन्द्रीय कोयला राज्यमन्त्री भ्राता प्रतीक पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। **6.दिल्ली-** योग कोनफेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु.बिमला बहन को किरण अचीवमेन्ट अवार्ड देते हुए तिहाड़ जेल की महानिदेशिका बहन विमला मेहरा। **7.खगड़िया-** बिहार की आपदा एवं उद्योग मंत्री डा.रेणू कुमारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कृष्णा बहन। **8.शिकागो-** इलिनोयस राज्य के महामहिम राज्यपाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.डा.बिन्नी बहन। **9.बीजिंग (चाइना)-** मैडम चेन, ब्र.कु.भ्राता विनोद को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 7.50, Issue : January 2014.

सोनीपत- 'सोनीपत रिट्रीट सेन्टर' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.लक्ष्मण भाई एवं अन्य।

महबूब नगर- श्री वेंकट साई मेडिकल कालेज में स्वास्थ्य प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता एस.एल.वी.नरसिम्हन। साथ में हैं ब्र.कु.महादेवी बहन तथा अन्य।

कुरुक्षेत्र- हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता जगन्नाथ पहाड़िया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज बहन। ब्र.कु.लक्ष्मण भाई तथा ब्र.कु.मधु बहन भी साथ में हैं।

रायपुर- विधानसभा चुनाव में विजय प्राप्त करने पर मुख्यमंत्री डा.रमन सिंह को बधाई देते हुए ब्र.कु.कमला बहन।